अच्छे बच्चे

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन आबू पर्वत (राजस्थान)

अच्छे बच्चे

बाल नैतिक शिक्षा
भाग 2

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू (राजस्थान)

बच्चों की सेवा में

'अच्छे बच्चे' नामक पुस्तक बच्चों की सेवा के लिये एक छोटा-सा प्रयास है। इसमें सबसे मुख्य श्रेय परमपिता परमात्मा शिव ही को है जिन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बच्चों की नैतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिये ज्ञान-प्रसाद दिया और सबल प्रेरणा भी दी। फिर इसमें विशेष श्रेय प्रजापिता ब्रह्मा को है जिन्होंने स्वयं भी इस विषय में विशेष कार्य किया और ईश्वरीय प्रेरणा का साकार रूप हमारे सामने रखा।

तत्पश्चात 'दादी जी' और 'दीदी जी', अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका और संयुक्त प्रशासिका को इसका श्रेय है जिन्होंने इस कार्य के लिये उत्साह बढ़ाया। साथ-साथ बाल चरित्र-निर्माण पुस्तक (भाग 1) के सम्पादक मण्डल को भी श्रेय है जिसके सहयोग से यह पुस्तक पूर्ण हुई।

आशा है कि बच्चों की नैतिक शिक्षा में यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगा।

ब्रह्माकुमारी अनु
बड़ौदा

बच्चों को अच्छा बनाने के लिये अच्छा प्रयास

आज विश्व-भर में बच्चों की उन्नति की ओर सरकारों तथा संस्थाओं का ध्यान तो गया है, परन्तु इस विषय में जो कार्य हो रहा है, उसमें नैतिकता तथा आध्यात्मिकता को यथेष्ट स्थान नहीं दिया जा रहा। प्राय: इस बात की ओर जन-मन का ध्यान नहीं गया कि नैतिकता ही किसी राष्ट्र की सच्ची निधि हुआ करती है और बच्चों में नैतिकता का विकास करने से ही नये समाज का अभ्युदय होता है।

अत: बच्चों को नैतिक शिक्षा देने के लिये जितने भी प्रयत्न किये जायें सराहनीय हैं। देश में उच्छृंखलता, अपराध और अत्याचार की रोकधाम की यही सर्वश्रेष्ठ विधि है।

नैतिकता ही शान्ति की जननी है। देश में नैतिकता का वातावरण बनने से ही देश में सच्ची शान्ति होगी और समाज का स्थायी कल्याण होगा।

'अच्छे बच्चे' नामक यह पुस्तक बच्चों को अच्छाई की ओर प्रेरित करने का एक अच्छा प्रयास है।

मुझे आशा है कि अध्यापक, अभिभावक तथा माता-पिता बच्चों को इस पुस्तक द्वारा लाभान्वित होने का अवसर देंगे।

ओम् शान्ति

ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि
मुख्य प्रशासिका,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भवन,
माउण्ट आबू (राजस्थान)

अच्छे कैसे बनें?

माता-पिता की सदैव शुभ-कामना बनी रहती है कि उनके बच्चे अच्छे बनें; बच्चे ही तो उनके कुल के दीपक होते हैं। अध्यापक वर्ग भी सदा यही शुभ-अभिलाषा रखते हैं कि उनके अध्ययन कक्ष में जो बच्चे हैं, वे अच्छे बनें; वे ही तो उनकी पाठशालाओं के मोर-पंख होते हैं। वास्तव में सारे देशवासियों की यह शुभेच्छा होती है कि देश में सभी नन्हें-मुन्ने, सभी बालक-बालिकाएं अच्छी ही हों क्योंकि सभ्यता और संस्कृति को चिरजीवी बनाये रखने के लिये सभी आशाएं उन्हीं पर ही तो टिकी होती हैं। बच्चे ही नये युग रूपी नयी फुलवाड़ी के ताज़ा फूल होते हैं। वे ही देश की नव-मुस्कान, नई किरणें और नव-चेतना लिये हुए नये समाज के अग्रदूत होते हैं।

ध्यान देने की बात तो यह है परमात्मा, जो सभी के परमपिता हैं और परमशिक्षक भी हैं, की भी यही कल्याण्-कामना है कि हम उनके अच्छे बच्चे हों, अर्थात् पवित्र, सच्चरित्र और गुणवान हों।

उस अच्छाई, पवित्रता और सच्चरित्रता, जिसे कि 'दिव्यता' भी कहा जाता है, के लिये ही तो वे ईश्वरीय ज्ञान रूप रत्नों का वरदान तथा दिव्य गुणों की अत्यन्त मूल्यवान स्नेह-भेंट हमें देते हैं। वे सेवा रूपी मेवा और योग-रूपी सहयोग देकर हमें कृतार्थ कर देते हैं। उनके शुभाशीर्वचन ये हैं "बच्चों, इस आध्यात्मिक ज्ञानप्रसाद द्वारा दैवी सम्पदा-सम्पन्न बनो अर्थात् मनुष्य से देवता, नर से श्री नारायण, नारी से श्री लक्ष्मी बनो।" अच्छे बच्चे बनने का यही अर्थ है।

'अच्छे बच्चे' पुस्तक को पढ़कर अनेकानेक बालकों तथा बालिकाओं को अच्छे बच्चे बनने की प्रेरणा मिलेगी।

ब्र.कु. मनमोहिनी,
संयुक्त मुख्य प्रशासिका,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
पाण्डव भावन, माउण्ट आबू

नैतिकता की नींव

हमारे देश के लिये यह एक बड़े दुर्भाग्य की बात है कि राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद यहाँ 'सेक्युलर' (secular) शब्द के अर्थ का अनर्थ करके, नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा की अवहेलना की गयी। उसके परिणाम-स्वरूप पिछले तीस वर्षों में छात्र वर्ग, युवा वर्ग या समूचे समाज़ की जो दशा हुई है, वह सचमुच शोचनीय है।

आज उस अवस्था को देखकर चारों दिशाओं में यह आवाज़ उठ खड़ी हुई है कि स्कूलों तथा कालेजों में नैतिक शिक्षा के लिए व्यवस्था की जानी चाहिये। परन्तु प्राय: लोग इस सत्यता को नहीं जानते कि आध्यात्मिक शिक्षा के बिना नैतिक शिक्षा अधूरी, कमज़ोर और अल्प-स्थायी होती है। वास्तव में आध्यात्मिक निष्ठा ही तो नैतिकता को आधार और बल देती है। उदाहरण के तौर पर अनेक नैतिक गुणों की धारणा के प्रसंग में यह जो प्राय: कहा जाता है कि मनुष्य में 'विश्व-भ्रातृत्व की भावना' होनी चाहिए, यह तभी तो साकार हो सकती है जब सभी स्वयं को एक ही विश्व-पिता परमात्मा की सन्तान मानें और एक-दूसरे को आत्मा की दृष्टि से भाई समझें; इसके सिवा तो विश्व के सभी लोगों में 'भाई-भाई' के सम्बन्ध का कोई आधार ही नहीं है। अत: आत्मा और परमात्मा की चेतना के बिना भ्रातृत्व की भावना व्यवहार में स्थायित्व पा ही नहीं सकती।

इसी प्रकार अच्छाई को अपनाने और बुराई को छोड़ने की नीति का अन्तोगत्वा यही तो आधार है कि कर्म का फल इस जन्म में यदि न भी मिले तो अगले जन्म में मिलता अवश्य है जिसका भाव, दूसरे शब्दों में, यह होता है कि आत्मा नाम की एक अभौतिक एवं अमर सत्ता है जो शरीरान्त के पश्चात् भी रहती है और वह संस्कार और कर्म के संयम को अपने साथ ले जाती है।

अत: परमपिता शिव और उनके साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा नैतिक शिक्षा को आध्यात्मिक शिक्षा से सुसंगत कर के ही देते हैं। उसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए ही इस पुस्तिका में भी आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा बहुत सरलता से दी गयी है।

यह पुस्तिका छोटे बच्चों के लिये तो लाभकर है ही, साथ ही सुगम होने से, मेरे विचार में, इसके कई अंश युवा, वृद्ध, सभी के लिये धारणा के योग्य हैं – वास्तव में बाल-वृद्ध हम सभी परमपिता के बच्चे ही तो हैं।

– ब्र.कु.जगदीश चन्द्र

मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रैस
ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन (तलहटी)
आबू रोड (राजस्थान)

अमृत सूची

क्र.सं. पृष्ठ

1. अच्छा बच्चा ——— 9
2. चेतन आत्मा और शरीर ——— 12
3. मुझे क्या बनना पसन्द है ——— 15
4. आत्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप है ——— 18
5. आत्मा का निवास स्थान – परमधाम ——— 20
6. आत्मा का स्वधर्म ——— 23
7. आत्मिक सम्बन्ध ——— 25
8. आत्मा मन-बुद्धि-चेतन संस्कारमय सत्ता है ——— 26
9. आत्मा सोचती है, निर्णय लेती है ——— 28
10. आत्मा को कर्मों के अनुसार फल मिलता है ——— 31
11. मैं कौन हूँ ——— 34
12. ज्योति बिन्दु रूप शिव ——— 36
13. परमपिता परमात्मा का वर्सा ——— 38
14. सृष्टि चक्र में परमात्मा का अवतरण ——— 41
15. त्रिमूर्ति शिव ——— 45
16. सर्व सम्बन्धी – परमात्मा ——— 47
17. कल्प वृक्ष ——— 49
18. कुछ पहेलियाँ ——— 51
19. विष्णु चतुर्भुज ——— 52

20. परमपिता परमात्मा की याद – (1) ---------- 55
21. परमपिता परमात्मा की याद – (2) ---------- 57
22. परमपिता परमात्मा की याद – (3) ---------- 59
23. संस्कार परिवर्तन ---------- 64
24. दैवी गुण ---------- 71
25. पवित्रता ---------- 73
26. नम्रता ---------- 76
27. स्वावलम्बन ---------- 79
28. निर्भयता ---------- 82
29. गुण ग्राहकता ---------- 84
30. प्रेम ---------- 86
31. हम अच्छे, सच्चे बच्चे ---------- 86
32. मर्यादा पालन ---------- 90
33. सहनशीलता ---------- 92
34. सेवा ---------- 94
35. हम भारत को स्वर्ग बनायेंगे ---------- 96

''अच्छा बच्चा''

मोहन अपने पप्पा, मम्मी, गोपाल भाई और अनुराधा बहन के साथ बैठा है।

मोहन – पप्पा, आज छुट्टी का दिन है। मैं अपने दोस्त के साथ रात को 9 से 12 बजे तक सिनेमा देखने जाऊं?

अनुराधा – मीठे मोहन, यह क्या कह रहे हो? रात्रि को? इतनी देरी से? और वह भी सिनेमा देखने?

गोपाल भाई – वे कौन हैं आपके दोस्त जो इतनी देर से जाने को कहते हैं? मोहन, विवेक से कहो, क्या इतनी देर से जाना अच्छा लगता है? क्या ये शोभास्पद है?

मोहन – भाई, अच्छा तो नहीं लगता, पर उनका बहुत आग्रह है।

गोपाल भाई – देखो मोहन, ज़रा सोचो, क्या अच्छा बच्चा ऐसा कहेगा? पता है समझदार बच्चा कैसा होता है?

मोहन – हाँ, अच्छा बच्चा अपने माता-पिता की आज्ञा पर चलता है। अपने अध्यापक का कहना मानता है। बड़ों का आदर करता है। सब से स्नेह से रहता है।

अनुराधा – तो फिर मान जाओ मोहन, मात-पिता का कहना है कि न जाओ!

मोहन – पर मैं दोस्तों को क्या कहूँगा? उनसे भी तो मुझे स्नेह से चलना है।

गोपाल भाई – दोस्तों को अच्छा बनाने के कार्य में सहयोगी बन जाओ। यही तो सच्चा स्नेह है। हिम्मत और स्नेह से उन्हें सच्ची बात बताओ तो क्या वे आपकी बात को नहीं मानेंगे?

मोहन – मानेंगे।

गोपाल भाई – मोहन, वह देखो श्री कृष्ण! कैसा अच्छा बाल-रूप है। सभी का लाडला है ना? उन-जैसा बनना पसन्द है?

मोहन – हाँ, क्यों नहीं? मेरा नाम भी है मोहन, श्री कृष्ण को भी मोहन कहते हैं ना? मैं ही श्री कृष्ण के समान महान बनूँगा।

अनुराधा – हाँ, हाँ, ज़रूर, मेरा मोहन भविष्य में श्री कृष्ण जैसा महान् बनेगा। अच्छा बच्चा ही तो श्री कृष्ण जैसा बनेगा! मोहन इसलिये सदा सच्चाई-सफ़ाई से रहना, स्वच्छता रखना, मीठा बनना, बड़ों का सम्मान रखना, धीरे से, नम्रता से बात करना, एक-दूसरे को सहयोग देना, समय पर स्कूल में जाना-आना। अध्यापक का कहना मानना, बिना पूछे किसी की चीज़ न लेना — इन सब बातों का ध्यान रखना है। अच्छा बच्चा प्रतिदिन परमपिता परमात्मा को भी प्यार से याद करता है।

गोपाल भाई – और मोहन, अच्छा बच्चा सदा अपना और सबका अच्छा ही सोचता है। अपने टीचर का कहना मानता है। पढ़ाई नियमित पढ़ता है। अच्छा बच्चा अपने शिक्षक और अपने माता-पिता दोनों का नाम ऊँचा करता है। परमपिता परमात्मा की आज्ञाओं पर चलता है। तो ऐसा सुयोग्य बच्चा बनना है।

मोहन – हाँ, मम्मी, हाँ पप्पा, आप जैसा कहते हो मैं वैसा ही सुयोग्य बच्चा बनूँगा और श्रीकृष्ण के समान बन के रहूँगा।

अनुराधा – शाबाश, बच्चे शाबाश!

गोपाल भाई – शाबाश, बच्चे शाबाश!

चेतन आत्मा और शरीर

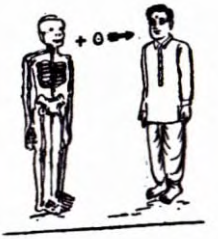

मैं आत्मा हूँ।
यह मेरा शरीर है।
मैं शरीर में रहता हूँ।

यह मेरा पेन है।
मैं पेन नहीं हूँ।

वह मेरा घर है।
मैं घर नहीं हूँ।

ये मेरे हाथ हैं।
मैं हाथ नहीं हूँ।

यह मेरी आँख है।
मैं आँख नहीं हूँ।

तो मैं कौन हूँ?

मैं आत्मा हूँ।

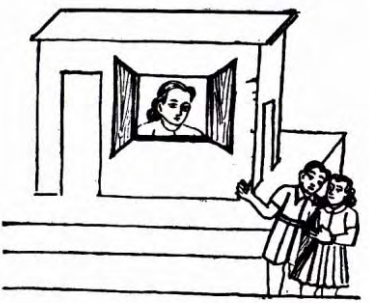

शैलेष खेलता है। खिड़की से मैं आत्मा उनको देख रहा हूँ। खिड़की बन्द हो जाये तो? शैलेष नहीं दिखाई देगा। आंख बन्द कर दें तो? तो भी शैलेष नहीं देखाई देगा।

मैं खिड़की नहीं हूँ। मैं आँख नहीं हूँ।
मैं चेतन आत्मा आँख द्वारा देखता हूँ।
मैं चेतन आत्मा मुख द्वारा बोलता हूँ।
मैं चेतन आत्मा शरीर द्वारा कार्य करता हूँ, खेलता हूँ, दौड़ता हूँ।

मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ। चेतन ज्योति-बिन्दु सितारा हूँ।
आत्मा शरीर में रहते हुए अपने को शरीर ही समझ लेती है, तब उसे 'देह-अभिमानी' कहते हैं।

आत्मा शरीर में रहते हुए अपने को आत्मा ही समझती है, तब उसे 'देही-अभिमानी' या 'आत्म-अभिमानी' कहते हैं।

प्रश्न

1. *मैं कौन हूँ?*
2. *मैं आँख हूँ? आँख द्वारा देखनेवाला कौन है?*
3. *देही या आत्म-अभिमानी का अर्थ क्या है?*
4. *देह-अभिमानी का अर्थ क्या है?*
5. *इनमें से ठीक शब्द जोड़ो मैं हूँ.....आत्मा, आँख, नाक, कान, शरीर, पेन।*

''मुझे क्या बनना पसन्द है?''

श्री कृष्ण – वैकुण्ठ-स्वर्ग का दैवी महाराजकुमार।

श्री सीता-श्री राम – दैवी गुण वाले, पवित्र देवी-देवता।

डाक्टर – रोगियों को राहत देने वाला।

शिक्षक – विद्या-निपुण और आजीविका के योग्य बनाने वाला।

किसान – अनाज उगाकर देने वाला।

वकील – झूठे आरोप से मुक्ति दिलाने वाला।

नेता – राष्ट्र का सुकानी।

राधा – (स्वगत) मैं क्या बनूँ? हैं तो सब अच्छे, पर ये श्रीकृष्ण बहुत सुन्दर हैं। क्या अच्छा है उनमें जो वे मुझे पसन्द है?

उनका तन? हाँ तन सुन्दर है, निरोगी, स्वस्थ, तन्दुरुस्त है अर्थात् कंचन काया है। और मन? मन भी सुन्दर है। कितने न्यारे फिर भी कितने प्यारे हैं।

सरल और सच्चे दिल के लगते हैं। मीठे और मिलनसार लगते

हैं और उनकी पोशाक और आभूषणों की क्या कहें? मस्तक पर सुन्दर दो ताज, खेलने के लिये मुरली, सुन्दर रत्नों के ये गहने!

हर रीति से तो वे अच्छे हैं। मैं वैसे ही बनूँ। श्री कृष्ण बनूँ, हाँ हाँ, मुझे बनना है तो श्रीकृष्ण ही।

मुझे श्रीकृष्ण बनना पसंद है?

स्वाध्याय

प्रश्न

1. राधा को श्रीकृष्ण के समान बनना क्यों पसंद है?

2. राधा की पसंदगी, आपकी पसंदगी है? क्यों?

आत्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है

आज राजू का जन्म दिन था। शाम को आइसक्रीम पार्टी रखी थी। गीत और पहेलियों का प्रोग्राम रखा था। सब छत पर इकट्ठे हुए थे। सबने राजू को जन्म दिन की बधाई दी। फिर तो आइसक्रीम खाना शुरू हुआ। तब नीता ने एक पहेली पूछी।

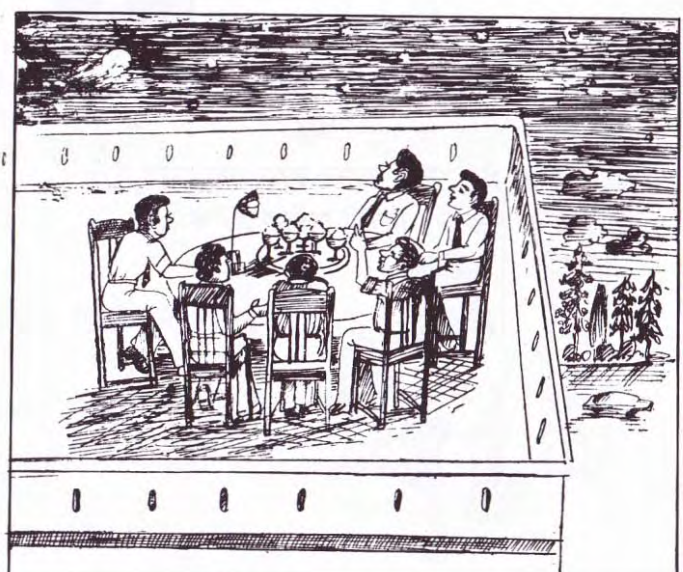

गिनती करने से गिनती हो न सके।
इकट्ठा करने जावें तो इकट्ठा हो न सकें।

फिर भी जो आपस में संगठन में रहते हैं।
और मेरे दर्पण में समा जाते हैं – वह कौन?

होशियार अशोक तुरन्त बोल उठा – वो रहे, वो रहे!
सितारे-सितारे! चमकते हुए सितारे, जगमगाते हुए सितारे!

इतने में राजू की मम्मी और मीना बहन आइसक्रीम लेकर आई। उन्होंने कहा, ''सितारों की क्या बात चल रही है?'' देखो, ''आप सबको इस धरती के चमकते हुए सितारे बनना है। हम आत्माएं हैं ना! हम आत्मा भी चमकते हुए जुगनू की तरह दिव्य ज्योति-बिन्दु सितारा रूप हैं। वो सितारे बड़े हैं, पर यहाँ से छोटे दिखाई देते हैं। हम ज्योति-बिन्दु सितारे तो बहुत सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु हैं जो इन स्थूल आँखों से नहीं दिखाई देते।'' यह सुनकर अनु बोल उठी, हाँ आण्टी, मेरी दादी माँ कहती थीं कि ''भृकुटि के बीच में चमकता है अजब सितारा'' वही सितारा ही तो ज्योतिबिन्दु आत्मा है ना? मीना बहन ने कहा, ''हाँ'' और अनु ने कहा, ''हमारी राजू भैया को बधाई है कि वो अच्छा, दिव्य ज्योति-बिन्दु सितारा बन सारे विश्व को रोशनी दे, विश्व में चमकता रहे और हम सब चमकते हुए दिव्य सितारे आपस में मिल-जुलकर स्नेह से रहे।

प्रश्न

1. राजू के जन्म दिन की पार्टी में क्या प्रोग्राम रखा था?
2. सितारों की विशेषता क्या है?
3. आत्मा कैसी है? किस-जैसी है?
4. क्या हम आत्मा को इन आँखों के द्वारा देख सकते है?
5. अनु ने राजू को क्या बधाई दी?

आत्मा का निवास स्थान – परमधाम

शरद-पूनम का दिन था। आज सोसायटी में मनोरंजन का कार्यक्रम रखा था। जिसमें जेसल-तोरल का नाटक भी था। रीना और राहूल अपने दादा जी के साथ बैठकर देखते थे। नाटक पूरा हुआ तो सबने अपने वस्त्र बदल दिये। रीना ने देखा और कहा,

तीन लोक

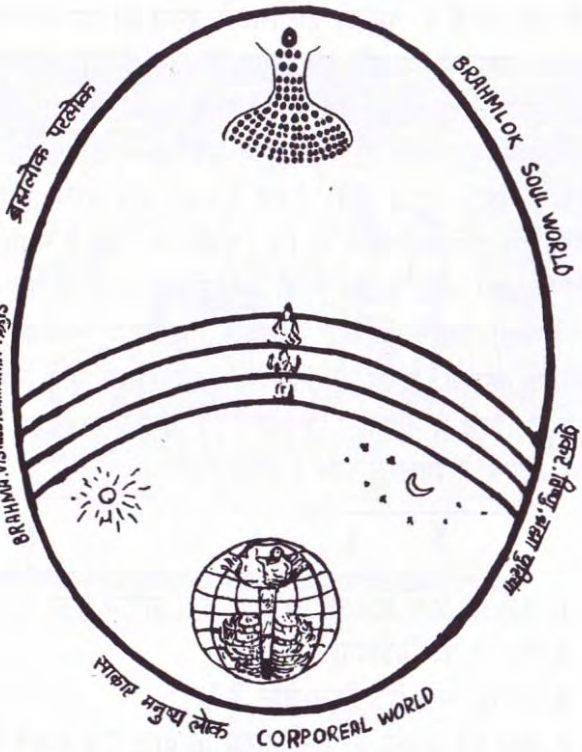

"देखो राहूल, सबको देखो, पता है अब सब कहाँ जायेंगे?

राहूल — हाँ, सब अपने घर जायेंगे। हम भी तो जायेंगे।

दादा जी — बच्चों, पता है ये सृष्टि भी एक नाटकशाला है। यहाँ पर आत्माएं अपना पार्ट बजाती हैं। पार्ट पूरा होने पर हम आत्माएं अपने निवास-स्थान परमधाम लौट जाती हैं।

राहूल — दादा जी, परमधाम कैसा है?

रीना — दादा जी, परमधाम कहाँ है?

दादा जी — परमधाम सबसे ऊपर का लोक है। सूर्य-चाँद सितारों से भी पार है। वहाँ परम शान्ति है। वही हम आत्माओं का मूल निवास स्थान है।

रीना — दादा जी, एक बात पूछूँ? हमें आप जिन देवताओं की कहानी सुनाते हैं, वे कहाँ रहते हैं?

दादा जी — यह मनुष्य लोक है। यहाँ हम आत्मायें शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। उसके ऊपर चाँद-सितारों से पार सूक्ष्म देवताओं की दुनिया है। सूक्ष्म देवता अच्छे होते हैं। उस दुनिया को **सूक्ष्म लोक** भी कहते हैं। उससे भी पार **परमधाम** हैं। उसे ही **ब्रह्मलोक** भी कहते हैं। क्या आपको पता है आत्मा शरीर में कहाँ रहती है?

रीना — कहाँ, दादा जी?

दादा जी — आपकी मम्मी रोज़ मस्तक पर क्या करती हैं?

रीना — तिलक

दादा जी — बस वही है आत्मा का शरीर में रहने का स्थान।

राहूल ने भृकुटि के बीच में इशारा करते हुए पूछा ''क्या यहाँ?''

दादा जी– हाँ वहाँ ही। उसे अकाल तख्त भी कहते हैं।

रीना खुश होकर बोल उठी, ''देखो राहूल आप वहाँ हो, मैं यहाँ हूँ।''

प्रश्न

1. आत्मा का निवास स्थान कहाँ है, आत्मा शरीर में कहाँ रहती है?

2. परमधाम या ब्रह्मलोक कहाँ है? वह कैसा है?

3. मनुष्य लोक में क्या होता है?

4. सूक्ष्म देवताओं की दुनिया कहाँ हैं? फरिश्ते कैसे होते है?

पानी शीतल होता है।

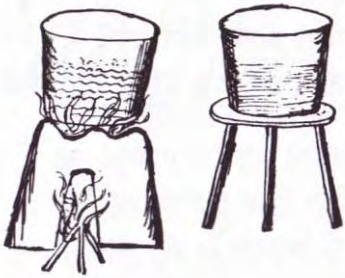

पर अग्नि के संग से उबलता है।

अग्नि हटा लेने से पानी धीरे-धीरे शीतल हो जाता है।

आत्मा का निजी गुण है शान्ति और पवित्रता। शान्त और पवित्र आत्मा है सतोगुणी आत्मा।

देह-अभिमान में आने से आत्मा विकारी अर्थात् चरित्रहीन बनती है।

विकारी आत्मा है रजोगुणी या तमो-गुणी आत्मा।

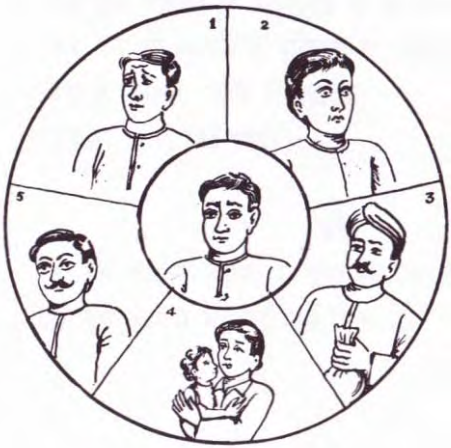

अपने को फिर से आत्मा समझ पर-मपिता परमात्मा को प्यार से याद करने से आत्मा फिर से शान्त और पवित्र, सतोगुणी बन जाती है।

1. अशान्त 2. क्रोधी 3. लोभी 4. मोही 5. अहंकारी

प्रश्न

1. आत्मा के निजी गुण क्या हैं?

2. देह-अभिमान के वश होने से आत्मा कैसी बनती है?

3. विकारी आत्मा अपने निजी गुणों अथवा स्वरूप वाली कैसे बनती है?

आत्मिक सम्बन्ध

एक ही डाल के पंछी है हम सब।
एक ही डाल के पंछी।
(चित्र पृष्ठ नं 49 पर देखें)
हम आत्माएं किस डाल के पंछी हैं?
हम आत्माएं परमधाम निवासी हैं।
वहाँ हम आत्माएं अपने परमपिता के साथ रहते हैं।
हम सब एक ही परमात्मा के बच्चे हैं।
एक पिता के बच्चे आपस में क्या होते हैं?
भाई-भाई।
हम सब आत्माएं आपस में भाई-भाई हैं।
गायन भी है –
''हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई
आपस में हैं भाई-भाई।''
हम सब भाइयों के परमपिता हैं परमात्मा शिव।
हम सब को आपस में पवित्रता से, शान्ति से, स्नेह से रहना है।
हम हैं आत्मा, आप हो आत्मा,
आपस में हैं भाई-भाई।

प्रश्न

1. हम सबका आपस में क्या सम्बन्ध है?
2. हम आपस में भाई-भाई किस नाते से हैं?

आत्मा मन-बुद्धि चेतन संस्कारमय सत्ता है

बिजली की शक्तियाँ अलग-अलग प्रकार की हैं।
मन, बुद्धि, संस्कार आत्मा की शक्तियाँ हैं।

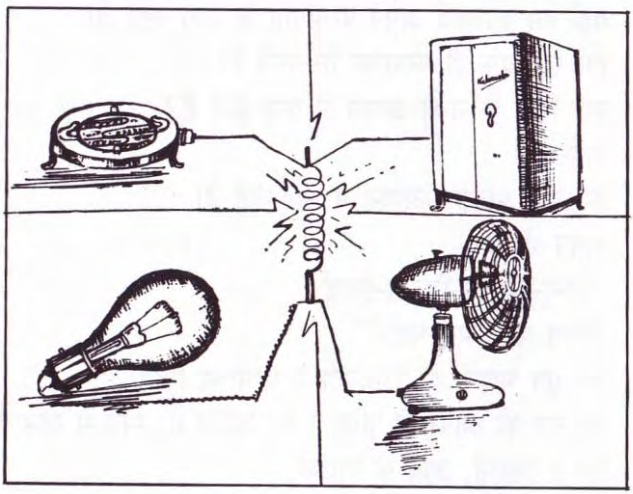

मन – जब आत्मा सोचती है।
बुद्धि – जब आत्मा निर्णय लेती है।
संस्कार – आत्मा के कर्म-अनुसार अच्छे या बुरे संस्कार होते हैं।

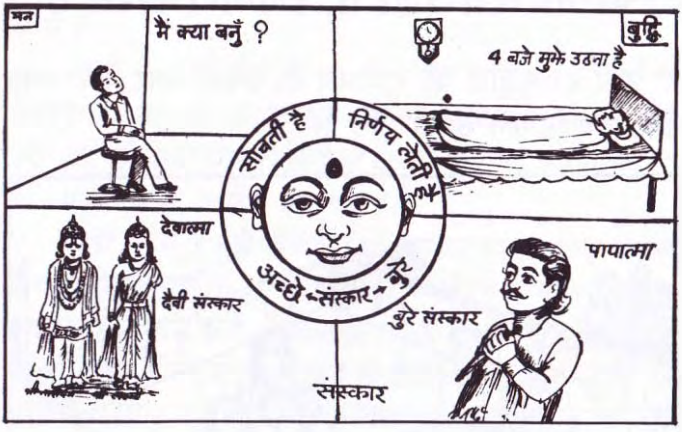

आत्मा के मन, बुद्धि और संस्कार के कारण आत्मा चेतन कहलाती है।

प्रश्न

1. आत्मा की तीन शक्तियाँ कौन-कौन सी हैं?

2. मन, बुद्धि और संस्कार किसको कहते हैं?

3. आत्मा चेतन क्यों कहलाती है?

''आत्मा सोचती है, निर्णय लेती है''

गर्मी की छुट्टीयों की शुरूआत है। समीर, अमर, उषा अपने मम्मी-पप्पा के साथ छत पर बैठे हैं।

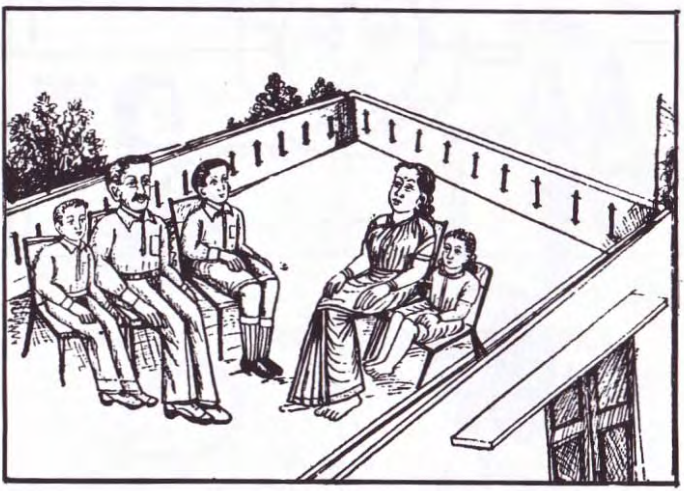

पप्पा – मेरा विचार है कि इस बार छुट्टियों के दिनों में हम एक सप्ताह के लिए, एक ही स्थान पर जाकर, वहाँ का पूरा लाभ उठायें।

समीर – हाँ पप्पा, आपका विचार ठीक है। मैं सोचता हूँ, हम देहली जायें तो वहाँ का लाल किला, कुतुबमीनार, गांधी जी की समाधि, जंतर-मंतर आदि बहुत ही देखने योग्य स्थान है, वो देखेंगे और ख़रीदारी भी करेंगे।

उषा – मेरी इच्छा तो बम्बई जाने की है, वहाँ मेरी सहेली वीणा भी रहती है। वहाँ गेट-वे ऑफ इण्डिया, एलीफेन्टा की गुफ़ायें,

विहारलेक, जूहू, चौपाटी, केनरी केव्स् आदि बहुत देखने योग्य स्थान हैं।

अमर — पप्पा, मेरा विचार तो जयपुर जाने का है, वहाँ की वेधशाला, हवामहल, आमेर का किला और राज महल भी अच्छा है। और वहाँ की कला तथा कारीगरी भी अच्छी है। मम्मी क्या कहती हैं?

पप्पा — हाँ, आपकी क्या राय है?

मम्मी — मैं तो यही सोचती हूँ कि इस बार माउण्ट आबू जावें तो अच्छा रहेगा? वहाँ की पहाड़ी पर गर्मी के मौसम में भी हम गर्मी से बचकर रहेंगे। गुरु शिखर, अचलगढ़, दिलवाड़ा जैसे अच्छे मन्दिर भी हैं तो सूर्यास्त और सूर्योदय के दृश्य भी देखने योग्य हैं। सुना है कि वहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का संगहालय भी बहुत अच्छा है और राजस्थान का विशेष स्थान होने के नाते वहाँ कला और कारीगरी के नमूने भी अच्छे मिलेंगे।

पप्पा — बात तो बड़ी अच्छी है। मांउण्ट आबू स्थान तो बहुत अच्छा है पर पहाड़ियों पर घूमने में आप थकोगी तो नहीं?

मम्मी — नहीं-नहीं, मेरा विशेष विचार वहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के आध्यात्मिक संग्रहालय जाने का है। सुना है कि इससे आत्मा को बहुत खुशी होती है, शान्ति मिलती है। इसलिये मैं तो वहाँ जाऊँगी।

पप्पा — वो तो जाना, पर सबकी इच्छा क्या है?

अमर — आपकी पसन्द सो हमारी पसन्द। स्थान बड़ा अच्छा है तो वातावरण भी अच्छा है।

समीर — मुझे तो बहुत पसन्द है। पहाड़ियों को देखकर मुझे मज़बूत, अचल, अड़ोल रहने की जैसे शिक्षा मिलती है। कुदरत की गोद में, पहाड़ियों के बीच, पवन के झोंकों में खेलना-घूमना मुझे तो

बहुत पसन्द है।

उषा – सूर्यास्त और सूर्योदय का दृश्य देखने की मेरी इच्छा तो पहले की है।

पप्पा – तो ऐसे ही करें, हम माउण्ट आबू ही जावें।

आत्मा जब सोचती है, विचार करती है, इच्छा दर्शाती है तो कहा जाता है, ये मन करता है। यहाँ समीर, उषा, अमर सबने अपना-अपना विचार बताया कि हम कहाँ जावें। विचार अलग-अलग थे, पर कौन से विचार को कर्म में लावें, इसलिये यह निर्णय बुद्धि करती है। यहाँ पप्पा ने निर्णय लिया कि माउण्ट आबू ही जावें। तो कहेंगे कि पप्पा की बुद्धि ने निर्णय किया और अन्य सभी की बुद्धिने निर्णय किया और अन्य सभी की बुद्धि का निर्णय भी उनसे मिलता था। जब आत्मा संकल्प या इच्छा करती है तो उसे हम कहते हैं कि 'मन' संकल्प या इच्छा कर रहा है।

जब आत्मा निर्णय लेती है तो हम कहते हैं कि 'बुद्धि' निर्णय कर रही है। स्पष्ट है कि मन आत्मा ही की विचार या संकल्प शक्ति का नाम है और बुद्धि आत्मा की निर्णय शक्ति का, चूँकि आत्मा ही ये सब करती है, इसलिये आत्मा को चेतन कहते हैं।

प्रश्न

1. उषा ने छुट्टियों के दिन में कहाँ जाने का सोचा?

2. समीर का छुट्टियों के दिनों में कहाँ जाने का विचार था?

3. आत्मा के सोचने, विचार करने या इच्छा करने को क्या कहते हैं?

4. पप्पा ने कहाँ जाने का निर्णय किया?

5. निर्णय कौन करता है?

आत्मा को कर्मों के अनुसार फल मिलता है

(अ) अच्छे कर्म का अच्छा फल

आज परीक्षा का परिणाम था। वैशाली उनके क्लास में प्रथम नम्बर में उत्तीर्ण हुई थी, चबूतरे के पास सब विद्यार्थी मित्र इकट्ठे होकर बातें करते थे। तब स्नेह ने कहा, ''पता है, वृज दीदी वैशाली का प्रथम नम्बर आया है?

परिमल – सचमुच वह मुबारकवाद की पात्र है, इस बारी भी उसे इनाम मिलेगा और किताब भी मिलेगी।

जगदीश – यह सच्ची बात है कि वह बहुत ही मेहनती है।

रोज़ क्लास में नियमित रूप से जाती है। ध्यान देकर पढ़ती है। रोज़ पठन-लेखन आदि का कार्य करके ही आती है और परीक्षा के समय तो प्रात: 4 बजे उठकर पढ़ती है। उसका तो पहला नम्बर आना ही चाहिये।

सोहाग – हाँ, ज़रूर, हरेक को अपनी मेहनत का फल अवश्य मिलता है।

(ब) बुरे कर्म का बुरा फल

रविवार की शाम थी। दादा और जग्गू काका के साथ मुन्नी और बबलू बैठकर बातें कर रहे थे। इतने में मुन्नी की नज़र दादा जी के मुँह की ओर गयी। मुन्नी ने कहा, ''दादा जी, आपके सभी दाँत क्यों गिर गये हैं?

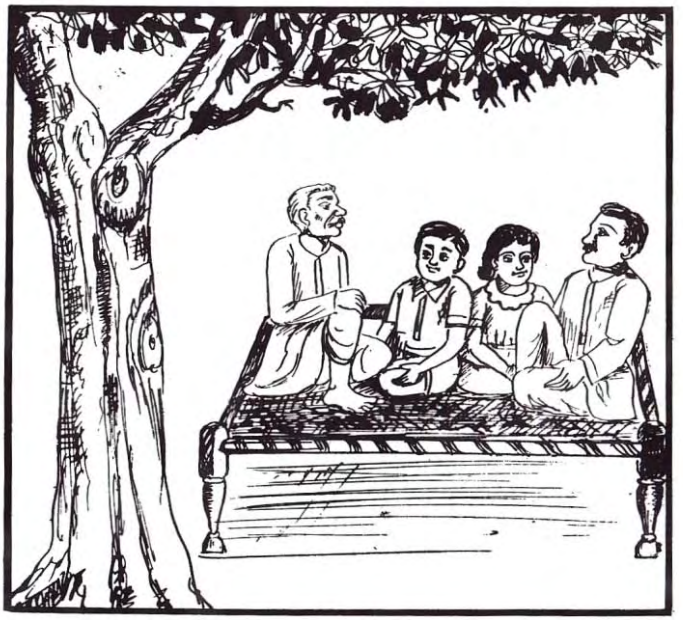

दादा जी – बेटा, आयु हुई, तो टूट गये।

बबलू – दादा जी, जग्गू काका के दाँत देखो, जग्गू काका तो इतने बूढ़े हो गए, फिर भी उनके दाँत कैसे हैं।

दादा जी – जो जैसा करता है वैसा पाता है। बचपन से आपकी दादी जी कहती थीं, पर मैं दाँत अच्छी तरह साफ़ नहीं करता था और फिर उस समय दोस्त ऐसे मिले जो पान खाने की बुरी आदत हो गयी। मुँह धुलाई भी नहीं करता था, तो दाँत सड़ गये और निकलवा दिये गये। मेरे जैसी भूल आप बच्चे न करना!

मुन्नी और बबलू – दादा जी, हम रोज़ सुबह टुथ-पाउडर और ब्रश से दाँत अच्छी तरह साफ़ करते हैं।

प्रश्न

1. वैशाली के प्रथम नम्बर में आने का कारण क्या था?

2. अच्छी मेहनत का फल कैसा मिलेगा?

3. दादा जी के दाँत जल्दी क्यों सड़ गये थे?

4. कैसे कर्म नहीं करना चाहिये?

''मैं कौन हूँ?''

मैं कौन हूँ? जानते हो मैं कौन हूँ?
आओ मैं अपना परिचय दूँ। सुनो मेरा परिचय क्या है!

मैं हूँ आत्मा।
मेरा रूप ज्योतिबिन्दु।
मेरे पिता शिव बाबा।
परमधाम निवासी हूँ।
शान्ति और पवित्रता मेरे स्वधर्म हैं।
ये ही मेरी शोभा हैं – समझे
मैं माना कौन हूँ?
मस्तक में, भृकुटी के बीच
जहाँ रहता हूँ, वहाँ तिलक करते हैं।
आँखों से मैं देखता हूँ।
कानों से मैं सुनता हूँ।
शरीर से मैं कार्य करता।
अभी मुझे पहचानते हो?
'मैं' का क्या अर्थ है?

'मैं' का भावार्थ है आत्मा, ज्योतिबिन्दु आत्मा।
जब भी मैं सोचता हूँ, कहते हैं कि मन संकल्प कर रहा है।
मन मुझ आत्मा ही की संकल्प शक्ति है।

जब मैं निर्णय लेता हूँ।
बुद्धि मुझ आत्मा ही की निर्णय शक्ति है।
मेरा कर्म जैसा होता है,
वैसे मेरे संस्कार बनते हैं।
मुझ में अच्छे संस्कार हैं।
मैं देवी या देवता बनता हूँ।
क्या अभी आप पहचानते हैं कि मैं कौन हूँ।
'मैं' कौन हूँ?
मैं हूँ एक आत्मा, हाँ, एक आत्मा, एक ज्योतिबिन्दु आत्मा।

प्रश्न

खाली जगह भरें।

1. मैं .....हूँ।
2. मेरा रूप .....है।
3. मेरा निवास स्थान .....है।
4. मेरा स्वधर्म .....और .....है।
5. शरीर में जहाँ बैठा हूँ, वहाँ .....हैं।
6. मैं आँखों से .....हूँ। .....से सुनता हूँ।
7. मैं सोचता हूँ, तब मुझे .....कहते हैं।
8. मैं निर्णय लेता हूँ, तब मुझे .....कहते हैं।
9. मेरे .....अनुसार, मेरे संस्कार बनते हैं।

ज्योतिबिन्दु रूप शिव

प्राणी संग्रहालय में शेर-शेरनी के पास, उनका बच्चा-छोटा शेर बैठा था। यह देखकर गोपाल बड़ा खुश हो उठा। कहने लगा, ''पप्पा देखो न, ये छोटा शेर कैसे है? जैसे शेर।'' पप्पा ने कहा, ''शेर का ही तो बच्चा है, तो निर्भयता भी शेर जैसी ही दिखाई देती है।'' गोपाल ने कहा, ''देखो न, वह कैसे हमारी ओर चुपचाप देखता है।''

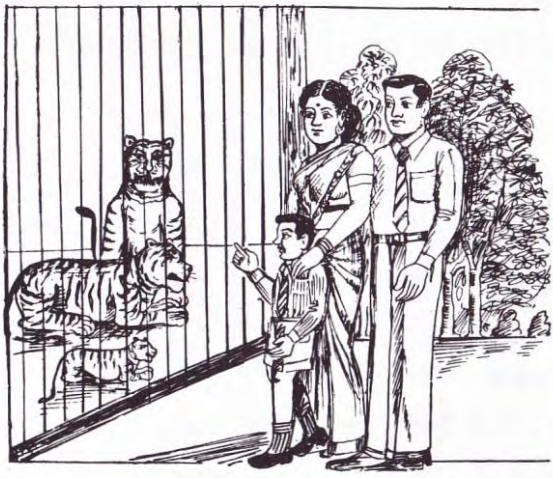

मम्मी ने कहा – ''हाँ वो देखता होगा कि ये बच्चा भी उनके माँ-बाप जैसा ही है।''

गोपाल – जैसा पिता का रूप वैसा ही बच्चे का रूप होता है। तो हमारे शिक्षक कहते थे कि आत्मा का रूप ज्योतिबिन्दु है तो ज़रूर आत्माओं के पिता, परमपिता परमात्मा का रूप भी ज्योतिबिन्दु ही होगा ना?

पप्पा – हाँ, आत्मा और परमात्मा, दोनों का रूप ज्योर्तिबिन्दु है।

गोपाल – और पप्पा, आत्मा का निवास स्थान परमधाम है तो परमात्मा का भी वो ही होगा?

पप्पा – हाँ, परमात्मा और आत्मा दोनों का निवास स्थान है परमधाम। परमपिता वहाँ सबसे ऊपर रहते हैं। गोपाल, आपको पता है, ज्योतिबिन्दु परमपिता की यादगार क्या है?

गोपाल – (सोचकर) शिवलिंग?

पप्पा – शाबाश, गोपाल! शिवलिंग है यादगार और परमात्मा का अर्थ-सहित नाम है 'शिव'।

गोपाल – पप्पा, मम्मी उन्हें 'भोलानाथ' भी कहती हैं।

पप्पा – हाँ, वह आत्माओं को ज्ञान-गुणों से सजा कर, स्वर्ग का वर्सा देते हैं, बदले में कुछ भी नहीं लेते हैं, इसलिए उन्हें भोलानाथ भी कहते हैं। गुण और कर्त्तव्य के आधार पर उन्हें पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर, सोमनाथ और अमरनाथ भी कहते हैं।

प्रश्न

1. परमात्मा का रूप कैसा है?

2. परमात्मा के रूप की यादगार क्या है?

3. परमात्मा कहाँ रहते हैं?

4. परमात्मा का वास्तविक नाम क्या है? गुण और कर्त्तव्य के आधार पर उनके और नाम बताओ।

5. परमपिता शिव को भोलानाथ क्यों कहते हैं?

परमपिता का वर्सा

पुत्र है पिता का वारिस, उसकी सम्पत्ति का अधिकारी।

पुत्र को पिता से वर्सा मिलता है पर धन-सम्पत्ति का। वह वर्सा नाशवान है, वह अल्पकाल के लिये है।

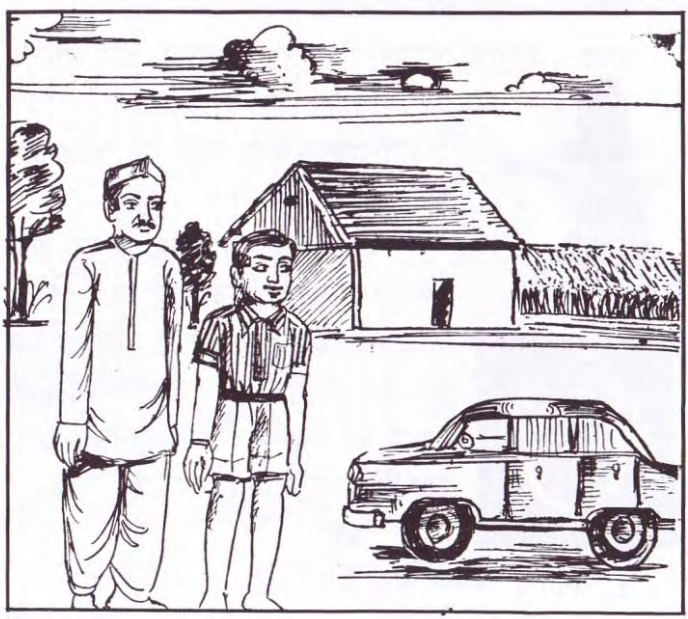

आत्मा है परमपिता परमात्मा की वारिस।

परमपिता परमात्मा से आत्मा को ज्ञान-गुणों और शक्ति का वर्सा मिलता है। उसे स्वर्ग के धन-धान्य और राज्य-भाग्य का भी वर्सा

मिलता है जो अविनाशी है।

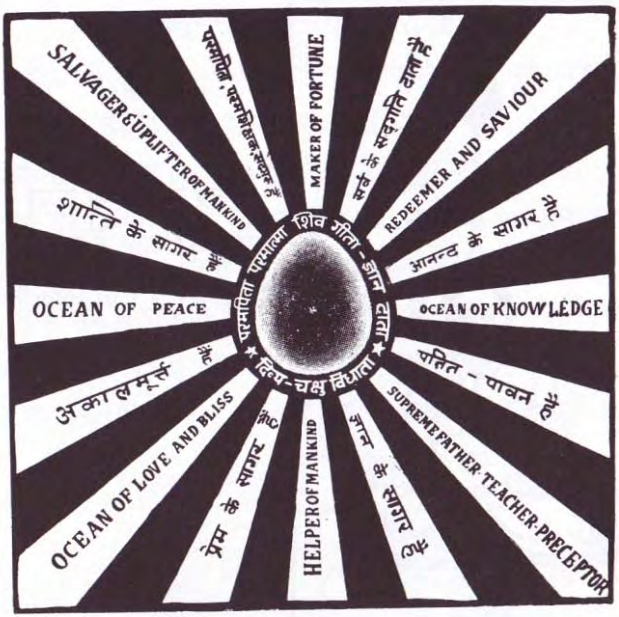

परमपिता हैं ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, पवित्रता के सागर, सुख के सागर, शान्ति के सागर, आनन्द के सागर, सर्वशक्तिमान्। हमें उस सागर से यह सब वर्से में मिलता है। यह अविनाशी है और उसका उपयोग करने से बढ़ता है।

'ज्ञान देने से ज्ञान बढ़ेगा।
प्यार से स्नेह से आपस में प्यार बढ़ेगा।
सुख देने से सुखी होंगे।
खुशी देने से खुशी बढ़ेगी'

परन्तु ये वर्सा मिले कैसे?

जब हम आत्मा अपने परमपिता को प्यार से याद करते हैं तब हमें ये वर्सा मिलता है।

प्रश्न

1. परमपिता परमात्मा किन गुणों के सागर हैं?

2. परमात्मा से हमें क्या वर्सा मिलता है?

3. परमपिता से मिले हुए वर्से की विशेषता क्या है?

सृष्टि-चक्र में परमात्मा का अवतरण

कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग

दिन की शुरूआत का, सूर्योदय से पहले का समय अमृतवेला गिना जाता है। जो यह शान्त, सुहावना, उत्तम समय है। तब लोग भजन-कीर्तन करते हैं। बच्चे पाठ याद करते हैं। मातायें उठकर अपना दैनिक कार्य शुरू करती हैं। सारे दिन का आधार है – 'अमृतवेला'। अमृतवेले का प्रभाव सारी दिनचर्या पर पड़ता है। फिर होती है सुबह। सुबह में सब चुस्त होते हैं, प्रफुल्लित होते हैं, सब सरलता से अपने कार्य में लग जाते हैं। बच्चे तैयार होकर स्कूल जाते हैं। पिता सर्विस पर या धन्धे पर जाते हैं। मातायें घर के कार्य में लग जाती हैं।

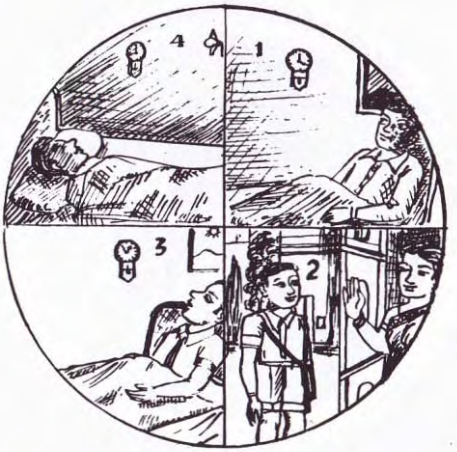

फिर आता है दोपहर। थोड़ी थकान मुँह पर दिखाई देती है। यह

खाना खाकर, थोड़ा आराम करने का समय है।

फिर होती है रात्रि। रात्रि में सब वापिस घर आते हैं। सभी थके हुए होते हैं। बच्चे पढ़ करके, और पिता धन्धे से लौटकर आते हैं। रात्रि में खाना खाकर लोग सो जाते हैं। रात्रि का वायुमण्डल इतना अच्छा नहीं होता।

अब फिर क्या आयेगा? अमृतवेला।

फिर? फिर सुबह-दोपहर-रात्रि — यह चक्र फिरता ही रहता है।

ऐसा ही चक्र है मनुष्य सृष्टि का। यह 5000 वर्ष का सृष्टि चक्र है।

1 कल्प = 5000 वर्ष। सृष्टि चक्र में पाँच विभाग है।

सतयुग में श्री लक्ष्मी, श्री नारायण का राज्य है, वहाँ सब देवी-देवता हैं। वहाँ सम्पूर्ण सुख-शान्ति और पवित्रता है। सब प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। आपस में प्यार से रहते हैं। यह 1250 वर्ष का युग है।

फिर आता है त्रेतायुग। वहाँ श्री राम, श्री सीता का राज्य है तब भी सभी सुख-चैनसे रहते हैं। यह भी 1250 वर्ष का है।

फिर आता है द्वापर युग। तब आत्मा पतित और अशान्त बनती है। मन्दिर बनते हैं, भक्ति शुरू होती है, इब्राहिम, गौतम बुद्ध, क्राईस्ट आदि आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। यह भी 1250 वर्ष का है।

फिर आता है कलियुग। कलह-क्लेश से भरे इस युग में मनुष्य बहुत बिगड़ जाता है। दु:खी होता है, उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति की राह नहीं दिखाई देती है। सब परमात्मा को पुकारने लगते हैं। यह भी 1250 वर्ष का है।

अब फिर कौन-सा युग आयेगा? (सतयुग)

सतयुग, हाँ सतयुग ही आयेगा, पर सतयुग कैसे आयेगा?

सतयुग लाने के लिये परमपिता परमात्मा सृष्टि पर आते हैं। यह समय है **कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग का**। यह है सबसे उत्तम युग, कलियुग के अंत और सतयुग के बीच का युग। इस युग में परमपिता आकर दु:ख से छुड़ाकर, सुख देते हैं। वे सच्ची राह दिखाकर देवता बनाते हैं।

पतितों को पावन बनाते हैं। सारा जग अच्छा बन जाता है। और आता है सतयुग, फिर त्रेतायुग, फिर द्वापर युग, फिर कलियुग.....यह चक्र भी बार-बार फिरता है।

अभी कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है।

प्रश्न

1. सारे दिन में सबसे उत्तम समय कौन-सा है? सब युगों में सबसे उत्तम युग कौन-सा है?

2. सतयुग कैसा है? वहाँ किसका राज्य है?

3. त्रेतायुग में किसका राज्य है?

4. द्वापर युग में क्या होता है?

5. कलियुग कितने वर्ष का है? तब क्या होता है?

6. पुरुषोत्तम संगमयुग की विशेषता क्या है?

7. परमात्मा सृष्टि पर आकर क्या करते हैं?

8. अभी कौन-सा युग चल रहा है?

स्लोगन्स

1. पुरुषार्थ स्नेही सर्व के स्नेही होते हैं।

2. स्वचिन्तन उन्नति की सीढ़ी है।

3. सरल व्यक्ति सबको प्रिय लगता है।

4. ज्ञानी बनो, योगी बनो।

5. मन स्वच्छ तो तन तन्दुरुस्त।

त्रिमूर्ति शिव

यह चित्र है – त्रिमूर्ति शिव का। सबसे ऊपर है ज्योतिबिन्दु शिव पिता का चित्र। नीचे साधारण वृद्ध मनुष्य है – प्रजापिता ब्रह्मा। चार भुजावाले विष्णु हैं, तीसरे हैं शंकर।

परमात्मा शिव

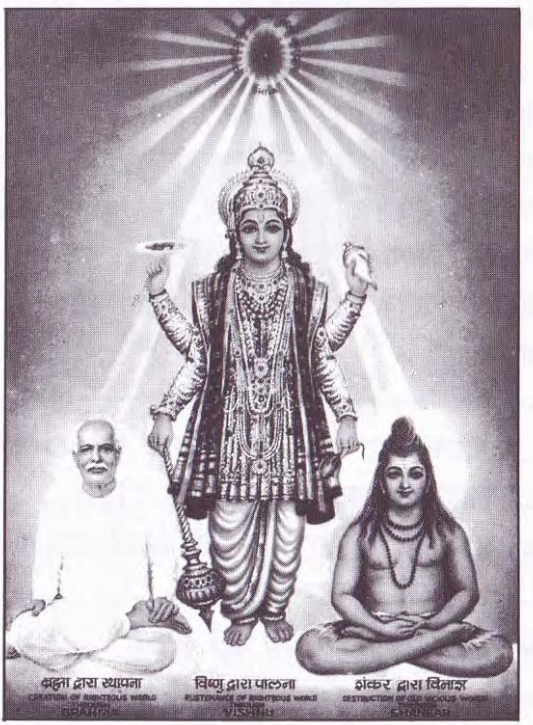

ब्रह्मा, विष्णु शंकर

परमात्मा इन तीन सूक्ष्म देवताओं के रचयिता हैं। इसलिए उन्हें 'त्रिमूर्ति शिव' कहते हैं।

परमपिता हमें ज्ञान कैसे देंगे? हमसे बात कैसे करेंगे? इसलिये वे साधारण वृद्ध मनुष्य के शरीर में प्रवेश करते हैं। जिनका नाम रखते हैं 'प्रजापिता ब्रहमा'। परमपिता शिव, प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से ज्ञान देते हैं। वे राजयोग सिखाकर दैवीगुण धारण कराते हैं। जो ईश्वरीय ज्ञान और दिव्य गुण धारण करते हैं वो हैं 'ब्रह्ममुख-वंशावली ब्राह्मण'। ये ब्राह्मण ही देवता बनते हैं और तब देवयुग आता है। उससे पूर्व पुरानी, पतित दुनिया का शंकर द्वारा विनाश होता है। एटम बम, हाइड्रोजन बम, ज़हरीली गैस, अतिवृष्टि, दुष्काल, धरती कम्पन, आग और गृह युद्ध द्वारा विनाश होता है। विष्णु अर्थात् श्री लक्ष्मी और श्री नारायण, वे सतयुगी दुनिया में राज्य करते हैं। स्वर्ग की पालना विष्णु द्वारा होती है। विष्णु -- श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के प्रतीक हैं। वे सतयुग में विश्व-महाराजन् और विश्व महारानी थे।

प्रश्न

1. परमपिता परमात्मा को 'त्रिमूर्ति शिव' क्यों कहते हैं?

2. ज्योतिबिन्दु परमात्मा हमें ज्ञान कैसे देते हैं?

3. नयी दुनिया की स्थापना परमात्मा किसके द्वारा कराते हैं?

4. नयी दुनिया का पालन कौन करता है?

5. पुरानी दुनिया का विनाश कैसे होगा?

सर्व-सम्बन्धी परमात्मा

विकास का उसकी क्लास में प्रथम नम्बर था। विकास होशियार विद्यार्थी था। साथ-साथ उसके मददगार थे उसके पिताजी, जो कि स्कूल में उसके शिक्षक भी थे। पढ़ाते थे। इसलिये विकास का 'विकास' जल्दी होता था।

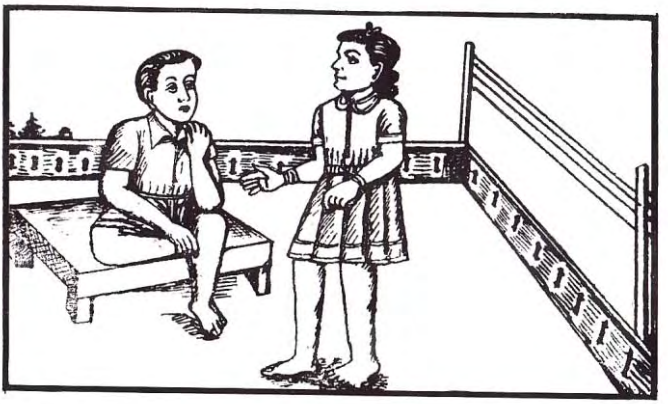

नरेन अपनी क्लास का होशियार विद्यार्थी था। वह प्राय: परीक्षा में प्रथम नम्बर लिया करता था। आज वह छत पर बैठकर सोच रहा था – ''विकास को कुछ भी पूछना होता है तो उसको उस एक से ही सब-कुछ मिल जाता है और हमें तो दो से पूछना पड़ता है – या तो पिताजी से, या शिक्षक से। एक से ही सब मिल जाय, यह बात है बड़ी अच्छी। इतने में सुनीता गीत गुनगुनाती हुई आयी।

''तुम्ही हो माता, पिता तुम्हीं हो
तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।''

नरेन ने सुना और तुरन्त उसे याद आया। वह तुरन्त बोल उठा, ''सुनीता, कमाल है, आपने मेरे प्रश्न का उत्तर दे दिया!

पता है नरेन के प्रश्न का उत्तर क्या होगा?

सुनीता के गीत से उसे याद आया कि परमपिता परमात्मा ही एक ऐसे हैं, जो मात-पिता, शिक्षक, बन्धु, सखा सर्व सम्बन्ध का स्नेह देकर, सर्व सम्बन्ध निभा सकते हैं, उस एक से ही मीठा, पक्का सर्व सम्बन्ध जोड़ दें तो? परमपिता तो हैं परमप्रिय, परम-पिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु। तब तो न सिर्फ़ क्लास में, पर सारे विश्व में, मैं सबसे अच्छा बन सकता हूँ। और वो परमपिताकी याद में गुनगुनाने लगा कि, ''अब तो आपकी याद में ही खाऊँ, आपसे ही बात करूँ, आपसे ही सुनूँ, आप संग खेलूँ, सदा आपके संग-संग रहूँ।

प्रश्न

1. परमात्मा से हम क्या-क्या सम्बन्ध रख सकते हैं?

2. सबसे अच्छा बनने के लिए हमें किससे पक्का सम्बन्ध रखना चाहिये?

3. सुनीता के गीत में नरेन के प्रश्न का उत्तर कैसे था?

कल्प–वृक्ष

वृक्ष की उत्पत्ति होती है बीज से। बीज में सारे वृक्ष का ज्ञान समाया होता है। वृक्ष के मुख्य भाग हैं – मूल, तना, शाखायें और पत्ते।

कल्पवृक्ष में है – मनुष्य सृष्टि का इतिहास। इस कल्पवृक्ष की आयु है 5000 वर्ष। इस कल्पवृक्ष के बीज रूप हैं परमपिता। उनमें सारी मनुष्य सृष्टि का ज्ञान है।

कल्पवृक्ष के मूल में हैं प्रजापिता ब्रह्मा, जगदम्बा सरस्वती और ब्रह्ममुख वंशावली ब्राह्मण जो सारे विश्व के आधार मूर्त्त है।

कल्पवृक्ष के तने में है –देवी-देवता धर्म। जहाँ एक भाषा, एक राज्य, एक धर्म है। जिसकी स्थापना परमपिता परमात्मा शिव ने की। इसको अब लगभग 5000 वर्ष होने आये हैं।

कल्पवृक्ष की मुख्य शाखायें हैं – इस्लाम धर्म, बौद्ध धर्म, क्रिश्चियन (ईसाई) धर्म। इस्लाम धर्म इब्राहिम ने स्थापन किया, जिसको लगभग 2500 वर्ष होने आये हैं। बौद्ध धर्म गौतम बुद्ध ने स्थापन किया, जिसको अब 2250 वर्ष होने आये हैं। ईसाई धर्म ईसा ने स्थापन किया, जिसको 2000 वर्ष हो जायेंगे।

कल्पवृक्ष के पत्ते हैं सर्व आत्मायें। जैसे सब पत्ते अलग-अलग होते हैं। वैसे हर आत्मा के संस्कार अलग-अलग हैं।

आज ये कल्पवृक्ष पुराना हो गया है, उसका तना सड़ गया है। सब धर्म शाखायें बिगड़ गयी हैं। इस की जरजर अवस्था हो गयी है। अब यह वृक्ष अपनी आयु पुरी कर चुकने वाला है।

बीज रूप परमात्मा फिर से आकर अविनाशी आत्मा को ज्ञान-योग से जागृत करते हैं। नये वृक्ष की कलम लगाते हैं। फिर से देवी-देवता धर्म शुरू होता है।

प्रश्न

1. *कल्पवृक्ष में क्या है?*

2. *कल्पवृक्ष के बीज रूप कौन है? कैसे?*

3. *कल्पवृक्ष के तने में कौन-सा धर्म है। वह किसने स्थापन किया? उसको आज कितने वर्ष होने आये हैं?*

4. *कल्पवृक्ष की मुख्य-मुख्य शाखायें कौन-कौन सी हैं? वे तीन धर्म किसने स्थापन किये? उनको आज कितने-कितने वर्ष होने आये हैं?*

5. *कल्पवृक्ष के पत्ते कौन हैं? हर आत्मा के संस्कार कैसे हैं?*

6. *कल्पवृक्ष पुराना होने पर परमात्मा क्या करते हैं?*

कुछ पहेलियाँ

1. *एक बिन्दु जैसा, जो है गुणों का सागर।*
वह सभी का बाप है – जिसका कोई बाप नहीं।
वह सभी का शिक्षक है – जिसका कोई शिक्षक नहीं।
वह सभी का सद्गुरु है – जिसका कोई गुरु नहीं।
वह कौन?

2. *एक बिन्दु है मीठा, जिसका तन है गोरा सुन्दर।*
पर जब आता कलियुग, तन मिलता है श्याम।
लोग उसे श्याम-सुन्दर कहते, पर है वो सतयुग का राजकुमार।
वह कौन?

3. *देवताओं को आये आज* 5000 *वर्ष हुए।*
मुसलमान धर्म की आयु 1400 *वर्ष।*
बताओ ईसाई धर्म की आत्मा की आयु कितनी?

विष्णु चतुर्भुज

विष्णु अर्थात् श्री लक्ष्मी-श्री नारायण। वो ही बचपन में श्री राधे-श्री कृष्ण के नाम से पहचाने जाते हैं।

श्री कृष्ण की महिमा है कि वे सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और अहिंसा प्रधान देवता हैं।

विष्णु के चित्र को अच्छी तरह से देखो। क्या-क्या दिखाई दे रहा है? मस्तक पर दो ताज हैं (1) एक रत्नजड़ित (2) दूसरा प्रकाश का तेजवर्तुल, वो हैं प्रारब्ध की निशानी। हस्तों में चार अलंकार हैं, वे हैं पुरुषार्थ का प्रतीक। गले में माला है विजय का चिह्न।

पुरुषार्थ के प्रतीक

(1) स्वदर्शन चक्र – 'स्व' अर्थात् आत्मा का दर्शन अर्थात् देखना, चक्र अर्थात् सृष्टि चक्र में अपने पार्ट को देखना।

(2) गदा – ज्ञान का, परमपिता परमात्मा की याद का बल जिससे बुराइयों का नाश करना है।

(3) कमल – स्वयं को विकारों से, बुराइयों से, दूर रखना।

(4) शंख – ईश्वरीय ज्ञान औरों को सुनाना।

प्रारब्ध का प्रतीक

(1) रत्नजड़ित ताज – सतयुग में सम्पत्ति-वैभव-समृद्धि की निशानी।

विष्णु चतुर्भुज

(2) प्रकाश का ताज – पवित्रता और दैवीगुण सम्पन्नता की निशानी।

पुरुषार्थ से दैवी राज्य की प्रारब्ध प्राप्त होती है।

प्रश्न

1. विष्णु कौन हैं?

2. श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का बचपन का नाम क्या है?

3. श्री कृष्ण की महिमा क्या है?

4. पुरुषार्थ क्या करना है?

5. प्रारब्ध क्या लेनी है?

6. गले की माला किसकी निशानी है?

परमपिता परमात्मा की याद (१)

जल्दी या बार-बार कौन याद आता है?

जो हमें बहुत प्रिय हैं, वह बार-बार याद आते हैं। परिचित व्यक्ति ही याद आता है। परिचय के बिना कोई याद नहीं आ सकता। अगर मैं कहूँ, ''मेरी एक सहेली है, आप को वह याद आती है? नहीं आयेगी, क्योंकि मैंने आपको उसका परिचय नहीं दिया है। मित्र, सम्बन्धी याद आते हैं। मात-पिता, शिक्षक, भाई-बहन भी याद आते हैं।

याद वह आते हैं जिससे हमें स्नेह हो, जिससे हमें प्राप्ति होती है। याद किया ही जाता है प्यारी चीज़ को, सुन्दरता को।

अपने को आत्मा निश्चय कर प्यारे से प्यारे, मीठे से मीठे परमपिता परमात्मा को परिचय सहित याद करने से शक्ति मिलती है।

परमपिता परमात्मा "नं-1" हैं याद करने-जैसे। वह है हमारे सर्व-सम्बन्धी वह ही कल्याणकारी, ज्ञान-गुणों के सागर, सर्वशक्तिवान हैं। वे हमें ज्ञान-गुण आदि सब वर्से में देकर हमारा कल्याण करते हैं। ऊंचे से ऊँचा, सुन्दर से सुन्दर, मीठे से मीठे, प्यारे से प्यारे, परमप्रिय हैं — परमपिता परमात्मा। तो उनकी याद भी इतनी ही मीठी है। हमें अपने परमपिता को बहुत-बहुत प्यार से याद करना है। एक टिक हो, पूरे दिल से, पूरे स्नेह से याद करना है।

मैं आत्मा, परमपिता परमात्मा का हूँ!

परमपिता परमात्मा मेरे हैं।

प्रश्न

1. परमपिता परमात्मा को कैसे याद करेंगे?

2. याद किसकी आती है?

परमपिता परमात्मा की याद (२)

योग के नियम

याद एक ऐसी सहज क्रिया है, कि जहाँ भी हो कर सकते हैं। बैठकर, चलते-फिरते, खाना खाते, पानी पीते, लेटे-लेटे, कार्य करते याद कर सकते हैं।

परमपिता परमात्मा की सहज याद के लिए कुछ बातें ज़रूरी हैं।

1. परमपवित्र परमात्मा को प्रिय है — पवित्रता, स्वच्छता। अगर हम पवित्र और स्वच्छ रहे तो हमें परमात्मा की याद आयेगी।

2. परमात्मा हैं ज्ञान, गुणों के सागर। वे हमें देवी-देवता बनाने आये हैं। अगर हम दैवीगुण धारण करें तो हमें गुणों के सागर

परमात्मा की याद जल्दी आयेगी।

3. अन्न का मन पर प्रभाव पड़ता है। कहते हैं – ''जैसा अन्न, वैसा मन'', तो सात्विक भोजन लेने से परमात्मा की याद रहेगी।

4. सत्य का संग हो। संग अच्छा हो। सबसे पहले मन, बुद्धि का संग हो, सत्य पिता परमात्मा के साथ। फिर उनका संग रहे जो परमात्मा का कहना मानते हैं। सच्चाई-सफ़ाई पर चलने वाले अच्छे, सच्चे बच्चे हैं।

प्रश्न

1. परमपिता की सहज याद के लिये क्या करना चाहिये?

2. याद कब-कब कर सकते हैं?

परमपिता परमात्मा की याद (३)

योग से लाभ

परमपिता की प्यारी याद से सारी सृष्टि का परिवर्तन होता है। कलियुग से सतयुग आता है, भारत स्वर्ग बन जाता है। परमपिता की स्नेह भरी याद, एक अग्नि है। जैसे अग्नि में सोना डालने से उसकी खाद निकल जाती है और सच्चा सोना रह जाता है, वैसे ही परमपिता परमात्मा की स्नेह भरी याद से आत्मा के बुरे संस्कार निकल जाते हैं और आत्मा पवित्र बनती है।

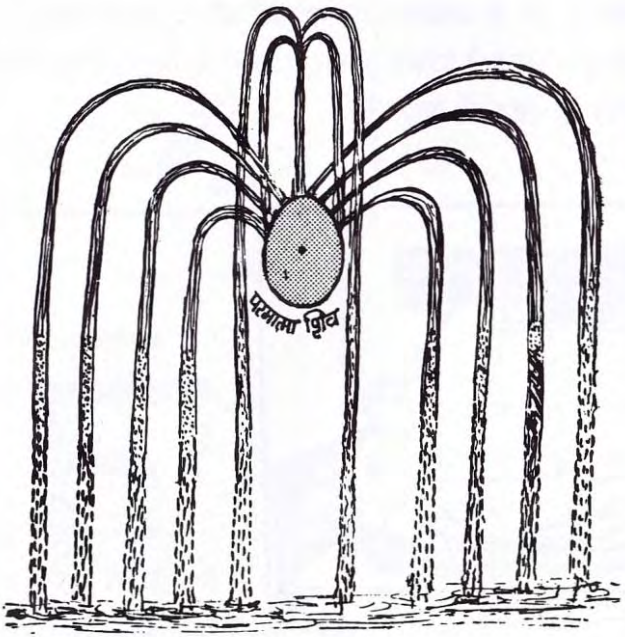

परमात्मा ज्ञान, प्रेम, पवित्रता, आनन्द, सुख-शान्ति के स्त्रोत हैं।

2. गर्मी के दिनों में पानी के फ़व्वारे के नीचे स्नान करने से शीतलता लगती है, मज़ा आता है, वैसे परमपिता की मीठी याद -- कलियुगी कलह-क्लेश वाली दुनिया में आत्मा को शीतल बनाती है, सन्तुष्ट करती है, ज्ञान, प्रेम, पवित्रता, आनन्द, सुख-शान्ति का अनुभव कराती है। आत्मा खुशी में झूमती है। उमंग उल्लास से भर जाती है। प्रसन्नचित्त और प्रफुल्लित होती है, जिसके लिये कहते हैं कि आत्मा को सुख मिलता है।

3. परमपिता की याद है -- आत्मा का सात्विक भोजन और मीठा टॉनिक। जैसे अच्छे भोजन से और टॉनिक से शरीर निरोगी रहता है, वैसे ही परमपिता की स्नेह भरी याद से आत्मा स्वस्थ, दैवी गुण युक्त बनती है जिसके आधार से शरीर भी निरोगी बनता है और शरीर की आयु भी बढ़ती है।

नमस्ते शिव बाबा! मैं आत्मा आपका लाड़ला बच्चा हूँ।

बाबा -- आप मेरे माता-पिता हो। मैं आपका स्नेही बच्चा हूँ।

शिव बाबा, आप ही मेरे परम सखा हैं। आप ही मेरे साथी भी हैं।

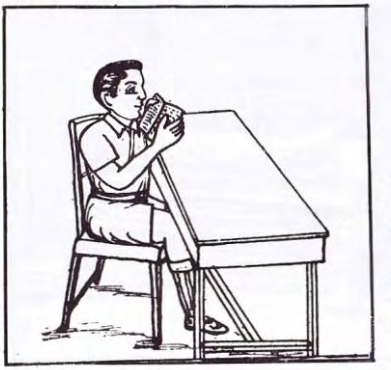

शिव बाबा, आप हमें सारे विश्व का सम्पूर्ण इतिहास समझाते हैं, यह राजयोग की ऊँची पढ़ाई पढ़ाकर वैकुण्ठ में राजाओं का राजा बनाते हैं।

शिव बाबा हम इस शरीर को भोजन खिला रहा हूँ। आप अत्यन्त मधुर हैं।

शिव बाबा, आज का दिन अच्छा रहा, मैं आपकी याद में रहा, बाबा अब इस शरीर को आराम देता हूँ। हम दोनों साथ रहें। बाबा, आप कितने प्रिय हो! परमप्रिय हो!

4. परमपिता की प्रेम युक्त याद आत्मा में शक्ति भर देती है।

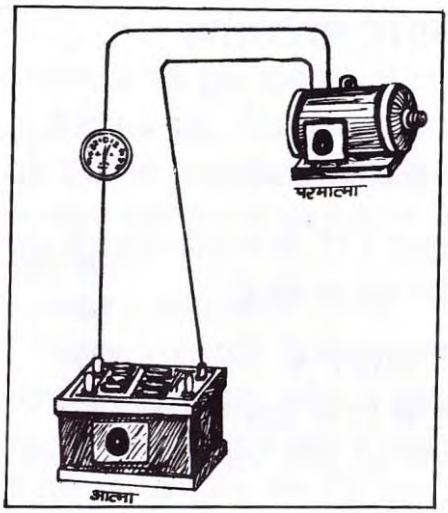

योग का अर्थ है — आत्मा रूपी बैटरी को परमात्मा रूपी जेनरेटर से जोड़कर फिर से शक्ति भरना है।

जैसे बैटरी में पावर कम होने से उसे जेनरेटर के साथ जोड़ने से उसमें पावर भर जाती है और पावर से फिर बैटरी कार्य करती है, वैसे ही परमपिता की प्यारी याद आत्मा में शक्ति भर देती है।

5. परमपिता परमात्मा की प्यारी याद से आत्मा पवित्र बनने से अच्छे संस्कार की धारणा सहज हो जाती है और कर्म करते-करते परमपिता की याद में रहने से जो कुछ कार्य करते हैं वह अच्छा होता है और कर्म अच्छी रीति कर सकते हैं।

प्रश्न

1. परमपिता की प्यारी याद से क्या-क्या होता है?

2. अच्छे कर्म करने के लिये, कर्म करते समय किसकी याद में रहें?

3. स्कूल में चरित्रवान बनने, अच्छा कार्य करने, अच्छा बनने, मात-पिता का प्रिय बनने के लिए क्या करेंगे?

संस्कार परिवर्तन

प्रमोद भाई – पिता　　विजय – बड़ा लड़का

सरिता बहन – माता　　मुकेश और स्नेहा –छोटा बच्चा और बच्ची

दीपक – प्रमोद भाई के मित्र दिनेश भाई का बच्चा।

प्रमोद भाई की बदली बड़ौदा में हुई, तो वे अपने परिवार के साथ पन्द्रह-बीस दिनों से बड़ौदा रहने आ गये हैं।

भाग १

प्रमोद भाई के घर के दिवानखंड में

विजय के शर्ट की भुजा चढ़ी हुई है, हाथ-पाँव पर रेत है, रोने-जैसा, गुस्सा करता हुआ आता है।

विजय – (स्वगत) देखना न – उनकी ख़बर ना लूँ तो! मैं भी कम नहीं हूँ! पता नहीं यहाँ के लोग कैसे हैं!

मुकेश – विजय भैया कहाँ थे? हम सभी काफ़ी देर से भोजन के लिये बुला रहे हैं।

स्नेहा – कहाँ गये थे भैया?

विजय – बीच में न आओ मुकेश, नहीं तो मार पड़ जायेगी।

पप्पा – (प्रवेश करते हुए) क्या हुआ विजय? क्या बात है?

मम्मी – (प्रवेश करते हुए) ये क्या धूल चढ़ाई है? (पास लेकर धूल झाड़ते हुए) किसी से झगड़ा हुआ है क्या?

विजय – हाँ, वो सामने वाला परेश सात दिन से परेशान करता है। समझता है ये यहाँ नया-नया है। अब तो मैं उसे पीटूँगा।

मम्मी – (विजय को बिठाते हुए) बैठो विजय, मुकेश बेटा, पानी ले आओ तो। (मुकेश पानी ले आता है, मम्मी विजय को पानी पिलाती है।)

पप्पा – क्या हुआ परेश से?

विजय – पप्पा, परेश अच्छा लड़का नहीं है, अगले रविवार मुझे अपने साथ पिक्चर देखने ले गया। फिर वहाँ रास्ते में लड़कियों पर मज़ाक करता था। फिर होटल में गये। वहाँ सबने न खाने-जैसा खाना खाया।

मम्मी – आपने खाया?

विजय – हाँ, उसी के तीन-चार और दोस्त थे। सबने मुझे ज़बरदस्ती खिलाया। कहा, यहाँ तो ये कुछ नया नहीं। बुद्धु होकर न रहना। फिर तो रोज़ जब मैं स्कूल से आता हूँ तो मेरे साथ हो जाते हैं और ऐसे-वैसे बोलना, मारा-मारी करना, झूठ बोलना, आदि सब करते हैं। मैं तो उनसे तंग आ गया हूँ।

पप्पा – उसको हम देख लेंगे! उसका गुस्सा फिर मुकेश पर न डालो। यह अशुद्ध अन्न, बुरे कर्म, अपशब्द बोलना, बुरा देखना, बुरा संग, ये सब बुरे संस्कार बनाने के निमित्त हैं। बुरे संस्कार से दु:ख होता है। इसलिये पहले तो इन सब से बचकर चलो और दिनेश भाई का लड़का दीपक है न — वह अच्छा है, आपके स्कूल में ही है। उनको मैं कह दूँगा। उसके साथ ही स्कूल में आना-जाना है।

विजय – अच्छा!

मम्मी – जाओ, हाथ-मुँह धोकर आओ। फिर खाना खा लो।

(विजय अन्दर जाता है)

दीपक – (प्रवेश करते हुए) आऊँ अंकल? पप्पा ने कहा है कल आप आफ़िस में जाओ तो पप्पा से मिल के जाना।

पप्पा – आओ दीपक, तुम्हारे पप्पा क्या कर रहें हैं?

दीपक – खाना खाकर घूमने निकले थे, तो पप्पा ने भेजा है।

पप्पा – अच्छा आ जाऊँगा, विजय, यहाँ आओ तो। (विजय ठीक होकर बाहर आता है)।

पप्पा – (विजय को) देखो, ये दिनेश भाई का दीपक है। बड़ा अच्छा बच्चा है। दीपक रोज़ विजय को अपने साथ ले जाना।। दोनों साथ में आना-जाना।

दीपक – हाँ ज़रूर। विजय कौन-सी कक्षा में हो?

विजय – सातवीं में और आप?

दीपक – मैं भी सातवीं में हूँ। चलो, मैं कल आपको बुलाकर ही जाऊंगा, अच्छा। (दीपक नमस्ते करके जाता है)।

भाग २

रास्ते में विजय और दीपक

विजय और दीपक, दोनों के हाथ में राखी बँधी हुई है। दोनों घर आते हैं।

दीपक – बातों ही बातों में मेरा घर तो आ गया। विजय नमस्ते।

विजय – ठहरो दीपक, मुझे एक बात पूछनी है, ये बैज़ क्या है?

दीपक – यह हमारे विद्यालय का बैज़ है। (बैज बताते हुए) यह हैं शिवबाबा। बिल्कुल नीचे विष्णु खड़े हैं और यह बाजू में हैं ब्रह्मा बाबा। शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा के द्वारा ज्ञान देकर विष्णु जैसा बनाते हैं!

विजय – शिव बाबा कौन हैं और विष्णु कौन हैं?

दीपक – शिव बाबा हैं परमपिता परमात्मा। वे ज्योतिबिन्दु स्वरूप हैं। बाबा अर्थात् पिता। परमात्मा हमारे परमपिता, परम शिक्षक और परम सद्गुरु हैं। वे ज्ञान, गुणों के सागर हैं, सर्वशक्तिवान हैं। जैसे पिता से बच्चों को वर्सा मिलता है, वैसे परमपिता

परमात्मा से ज्ञान-गुण-शक्ति का वर्सा मिलता है।

विजय – और विष्णु?

दीपक – विष्णु अर्थात् श्री लक्ष्मी और श्री नारायण। उनका बचपन का नाम है श्री राधे-श्री कृष्ण। उन्हें **'राजाओं का राजा'** भी कहते हैं। शिव बाबा राजयोग सिखाकर, सच्ची सत्यनारायण की कथा सुनाकर, श्री नारायण या श्री कृष्ण के समान बनाते हैं।

विजय – श्री कृष्ण?

दीपक – हाँ, श्री कृष्ण। देखो विजय, यह राखी हमारी रुहानी बहन जी ने बाँधी है। कल रविवार को बच्चों की क्लास भी है और विशेष योग भी है। कल शाम छः बजे, राखी बंधवाने आना। मैं वहाँ ही होऊंगा।

विजय – ज़रूर दीपक, कल शाम, विद्या-भवन पर मिलेंगे। गुडबाई।

भाग ३

रुहानी विद्या-भवन पर

रुहानी विद्या भवन के बड़े कमरे में विजय आकर बैठा है। दीदी जी की आवाज़ सुनाई दे रही है।

''मीठे बच्चो, आप ही तो नये विश्व की नींव हो। आपको ही तो सतयुग लाना है आपको ही तो नया विश्व बनाना है। आप ही तो कल्प-कल्प के विजयी रत्न हो। होवनहार दैवी विश्व-महाराजन् या दैवी विश्व-महारानी हो। देवी-देवता बनने वाले हो। आपने ही तो स्नेह से भारत को स्वर्ग बनाया था। अब और कुछ नहीं करना है, सिर्फ़ कल्प पहले का विजयी बनने का पार्ट दुहराना है। विजयी थे और विजयी बनना है। यह विजय का तिलक सदा स्मृति में रहे।
अच्छा, ''मीठे-मीठे बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

(विजय बड़े ध्यान से सुनकर हर्षित हो रहा है)

विजय – (स्वगत) कितनी सुन्दर ये वाणी है। यहाँ का वायुमण्डल कितना शान्त-पवित्र स्नेहभरा है। बड़ा अच्छा लगता है। (दीपक आता है)।

दीपक – आ गये विजय?

विजय – हाँ दीपक, वह कौन बोल रही थीं?

दीपक – वह हमारी दीदी जी हैं। शिव बाबा की मुरली अर्थात् वाणी सुना रही थीं।

विजय – दीपक, मुझे यही लगता था कि शिव बाबा मुझे ही कहते हैं – मैं ही देवी या देवता था। मुझे ही नया विश्व बनाना है। स्वर्ग बनाना है। मुझे ही विजयी बनना है। मैं ही विजयी रत्न हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।कल भी रात को मैं शिव पिता को याद कर रहा था। लगता था कि मैं परमात्मा का प्रिय बच्चा हूँ। मुझे बहुत अच्छा बनना है।

दीपक – आओ विजय, दीदी जी से राखी बँधवायें।

(इतने में दीदी जी भी अन्दर आती हैं)।

दीदी जी, यह मेरा मित्र विजय है। राखी बंधवाने आया है।

दीदी जी – आओ विजय!

(दीदी जी तिलक करती है। राखी बांधती हैं। और लिखित नीति वचन की सौग़ात देकर, मुख मीठा कराती हैं।

दीदी जी – ये नीति वचन पढ़कर सुनाओ।

विजय — (पढ़ता है) सत्य पिता परमात्मा को प्रिय हैं — सच्चाई और सफ़ाई वाले बच्चे! निश्चय बुद्धि विजयन्ति।

दीदी जी — तो सदा सच्चे होकर रहना। 'विजय' आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। बोलो, आप बहनों को क्या दोगे?

विजय — अभी तो मैं पढ़ता हूँ, तो क्या दूँ? हाँ, मैं स्वयं ही शिव बाबा का सपूत बनकर अपने परमपिता का नाम रोशन करूँगा। भारत को स्वर्ग बनाऊँगा।

दीदी जी— तुम्हारे मुख में गुलाब। हम यही वचन लेना चाहती थीं और कुछ नहीं। कल फिर दीपक के साथ आना।

विजय हाँ, नमस्ते दीदी जी।

भाग ४

विजय के घर के दिवानखंड में

मुकेश और स्नेहा पैन के लिए झगड़ते हैं। विंजय आते ही देख रहा है।

विजय — (स्वगत) शिव बाबा, क्या करूँ?

(तुरन्त) ये रही, ये रही, देखो मुकेश, देखो!

मुकेश — क्या?

विजय — (अन्दर आकर) पैन। किसको पैन चाहिये!

स्नेहा — मुझे चित्र में रंग भरना है और मुकेश ने मेरी पेन्सिल खो दी है।

विजय — ठहरो। मैं अपनी पैन्सिल ला देता हूँ।

(विजय अपने दफ़्तर से अपनी लाल पैन्सिल ला कर स्नेहा को देता है। स्नेहा मुकेश का पैन लौटा देती है। ये सब प्रमोद भाई और सरिता बहन प्रवेश कर देख रहे हैं)।

पप्पा — शाबाश, विजय। आप में तो बड़ा परिवर्तन आ गया है।

विजय — हाँ पप्पा, मैं आज दीपक के साथ विद्यालय में गया था। बहुत आनन्द आया। राखी बंधवाई। मैं बहुत अच्छा बनूँगा।

पप्पा — हाँ, और बनना शुरू भी कर दिया है ना? मार से नहीं पर प्यार से, सहयोग से मुकेश और स्नेहा को मना लिया। ये लो ये पैन। आप के अच्छे कर्म की सौग़ात। शिव बाबा को याद करना!

(पप्पा, विजय को पैन देते हैं जिस पर 'शिव बाबा' लिखा है)।

पप्पा — हम भी आज वहाँ गये थे यह देखो, सबके लिये क्या लाये हैं। विजय, मुकेश, स्नेहा — क्या?

मम्मी — (श्री कृष्ण का चित्र दिखाकर) ये है स्वर्ग का राजकुमार श्रीकृष्ण, विश्व में सबसे सुन्दर, सबसे अच्छा, समझदार बच्चा। ऐसा बच्चा बनना।

पप्पा - (शिव पिता का चित्र दिखाकर) ये हैं सर्व आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव। उन्हीं की आज्ञा पर चलने से, श्रीमत पर चलने से ऐसा, श्रीकृष्ण जैसा देवता बनेंगे न सब?

विजय, मुकेश, स्नेहा (एक साथ) -- हाँ, हाँ, ज़रूर बनेंगे।

प्रश्न

1. विजय के संस्कारों का परिवर्तन कैसे हुआ?
2. बुरे संस्कार पड़ने का मुख्य कारण क्या है?
3. बुरे कर्म का फल क्या है?
4. विजय के अच्छे कर्म का फल उसे क्या मिला?
5. सबसे अच्छा बच्चा कौन है?
6. अच्छा बनाने वाला कौन हैं?
7. विष्णु, श्री नारायण-श्री लक्ष्मी और श्री राधे-श्री कृष्ण में क्या अन्तर है?
8. विजय ने मुकेश और स्नेहा के प्रश्न का हल प्यार से कैसे दिया?
9. विजय ने दीदी जी को क्या सौगात दी?

दैवी गुण

दैवी गुण हैं जीवन का श्रृंगार। दैवी गुणों से जीवन सरल, सहज और सुन्दर बनता है जैसे कि सोने में हीरे-रत्न जड़े हों। दैवी गुण हैं

आत्मा की मीठी खुशबू जिससे अपना और आप-पास के सभी का जीवन सुगन्धित रहता है।

आज के मनुष्य को मनुष्य कहते हैं। श्री लक्ष्मी, श्री नारायण को, श्री सीता,श्री राम को देवी-देवता कहते हैं, इसका कारण यही है कि देवी-देवतायें हैं दैवीगुण वाले।

देवी-देवता सर्व को प्रिय लगते हैं। देवी-देवताओं का मुख्य गुण है पवित्रता। देवता बहुत सरल, सहज और मीठे हैं। वे निर्भय हैं, निर्वैर हैं। अन्तर्मुख हैं, हर्षितमुख हैं, धैर्यवान हैं तो गम्भीर और रमणीक भी हैं। उन्हीं के मुख पर सदा सुन्दर स्मित दिखाई देता है। शीतलता और सन्तुष्टता मुख पर झलकता है। वे सारे विश्व के मालिक हैं, पर हैं कितने नम्र। प्यार से सर्व के दिलों को जीतकर राजा बने हैं। ऐसे अच्छे देवी-देवता बनने, सब दैवीगुण धारण करने पर हम सभी के प्रिय बन सकते हैं।

जैसे गणित में सरलीकरण उसकी रीति अनुसार ही किया जाता और तभी सच्चा जवाब आता है। वैसे ही दैवीगुण धारण करने की भी रीति है जिस रीति को अपनाने से 'दैवी गुण' धारण होते हैं।

हर दिव्य गुण की धारणा का आधार है – पवित्रता। पवित्रता होगी तो दैवीगुण होंगे।

प्रश्न

1. दैवी गुणों वाले कौन हैं?

2. देवता सबको प्रिय क्यों हैं?

3. दैवी गुणों की धारणा से जीवन कैसा बनता है?

पवित्रता

जिसके मन, वचन और कर्म तीनों ही स्वच्छ हैं वह है – 'पवित्र'। पवित्रता में ही सच्ची सुन्दरता है। पवित्र है तो मिल-जुलकर रह सकेंगे। पवित्रता महानता है।

परमपिता परमात्मा हैं – सदा पवित्रता के सागर। उन्हें प्रिय हैं पवित्र बच्चे। परमपिता का प्रिय बनने के लिये ज़रूरी है कि हम पवित्र बनें। पवित्र कैसे बने?

आत्मा को सम्पूर्ण पवित्र बनने के लिये पवित्रता के सागर परमात्मा को बहुत-बहुत प्यार से याद करना है और आपस में "हम सब आत्मायें भाई-भाई हैं यह समझ के साथ रहना है और परमपिता परमात्मा के सुनाये हुए महावाक्यों का मनन करना है। उन्हें कर्म में लाना है।

अपने वचन को शुद्ध करने के लिये, ईश्वरीय ज्ञान की लेन-देन करनी चाहिये। ज्ञान-युक्त किताब पढ़कर, सुनकर, समझकर औरों को सुनाना और समझाना चाहिये।

कर्म में स्वच्छता लाने के लिये सदा अच्छे कर्म करें। अपना तन स्वच्छ रखें। मुँह, दांत, कान, बाल आदि साफ़-स्वच्छ रखें। नाखून बढ़े हुए न हों। प्रतिदिन स्नान करना चाहिये। कपड़े भी स्वच्छ पहनें। भोजन हाथ धो करके लें।

बच्चे अपनी किताब, अपना कमरा स्वच्छ रखें, फ़ालतू चीज़ें इधर-उधर न डालकर, कचरे की पेटी में ही डालें। अपनी शैया को स्वच्छ रखें। स्कूल से आकर या खेल खेलने के बाद हाथ-पाँवों को धुलाई करके और कार्य करें। सबके साथ अपने घर में और अपने

स्कूल में भी स्वच्छता रखने में मददगार बनें।

बुरी आदतें भी अस्वच्छता ही हैं। किसी का बुरा सोचना, मुख से अपशब्द बोलना, चोरी करना, निन्दा करना, झूठ बोलना, गंदी चीज़ें खाना, बीड़ी-सिगरेट पीना, गन्दे चित्र देखना, जुआ खेलना, एक दूसरे को मारना, बुरी किताबें पढ़ना इन सबसे बचकर रहें। ऐसे के संग से बचते रहें। इसलिये ये नीति-वचन याद रहें –

बुरा मत देखें। बुरा मत बोलें। बुरा मत सुनें। बुरा मत करें। बुरा मत सोचें।

बुरा मत सोचों। बुरा मत बोलो। बुरा मत करो। बुरा मत सुनो। बुरा मत देखो। तो पवित्र बनोगे। परमपिता के प्रिय बनोगे।

बच्चे हैं – महात्मा। उसका कारण है उनकी पवित्रता। बच्चों में बुरी आदतों का इतना ज्ञान नहीं होता। तो बच्चे अपनी पवित्रता का

गुण पूरा धारण करके, सदा के लिये उसे अपना बना लें। बुराइयों से बचते रहें। श्रेष्ठ संस्कार ही धारण करें।

प्रश्न

1. परमपिता परमात्मा को कैसे बच्चे प्रिय है?
2. पवित्रता से क्या-क्या होगा?
3. आत्मा पवित्र कैसे बने?
4. वाणी को शुद्ध कैसे करें?
5. कर्म की पवित्रता में क्या ध्यान रखेंगे?
6. पवित्र बनने के लिये कौन-सी बुरी आदतों से बचेंगे?
7. पवित्र बनने में कौन-सा नीति-वचन याद रखें?

स्लोगन्स

पवित्रता ही महानता है।
पवित्रता ही हमारा स्वधर्म है।
पवित्रता है शूरवीरता।
परमपवित्र परमपिता को प्रिय है पवित्रता।

नम्रता

नम्र व्यक्ति महान् है, महान् व्यक्ति नम्र हाता है। जो नम्रता का गुण धारण करता है, वह उन्नति करता है।

नम्र व्यक्ति छोटे या बड़े सबकी बात सुनता है और उसकी सत्यता को स्वीकार करता है। वह सबको आदर देता है। अपने व्यवहार में उसने ''हाँ जी'' और ''पहले आप'' का पाठ पक्का किया हुआ है।

नम्र व्यक्ति सरल स्वभाव का होता है। नम्र व्यक्ति के आगे सब अपनी बात सहज रीति से स्पष्ट कर सकते हैं। नम्र व्यक्ति विनयी, विवेकी और सादगी वाला होता है। नम्र व्यक्ति अपनी भूल को महसूस कर, उसमें सुधार ला सकता है। नम्रता के कारण औरों से सहज सीख सकता है। एक अच्छे विद्यार्थी के लिये, अच्छा बच्चा बनने के लिये नम्रता ज़रूर धारण करें। नम्र व्यक्ति किसी की भी

सेवा सहज कर सकता है और उसे अपने उपकार तले न रख-कर 'निरहंकारी' रहता है। नम्र व्यक्ति बड़ों को अपनी बात निर्भयता और शान्ति के साथ कह सकता है।

नम्र व्यक्ति सबके आगे झुकता है। पर सारा विश्व उसके आगे झुकता है। जैसे पका हुआ आम का वृक्ष झुककर, अपना फल

औरों को देता है, वैसे ही नम्र व्यक्ति अपने गुण और विशेषता औरों को देता है। नम्र व्यक्ति कायर नहीं पर निर्भय-निडर होता है।

नम्र बनने के लिये अपने को ज्योतिबिन्दु आत्मा समझे।

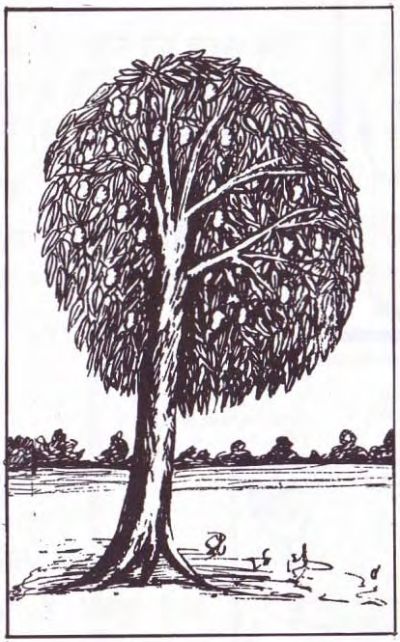

फलों से लदा वृक्ष
सदा झुका रहता है।

बिन्दु को क्या अहंकार? कुछ नहीं। अपने को परमपिता परमात्मा का बच्चा समझे। नम्र बनके स्वयं को सेवाधारी समझ सेवा करे।

प्रश्न

1. नम्र व्यक्ति कैसा होता है?

2. नम्रता से क्या लाभ है?

3. सेवा के लिये मुख्य आवश्यक गुण कौन-सा है?

4. नम्र कैसे बनें?

स्वावलम्बन

स्वावलम्बन का अर्थ है – स्वयं पर आधारित होना। अपना कार्य अपने आप कर लेना। किसी अन्य पर अपना कार्य न छोड़ना। स्थूल कार्य तो अपने आप कर ही लेना पर साथ-साथ बुद्धि का कार्य भी अपने-आप करना। अध्यापक द्वारा घर के लिये पढ़ाई का जो कार्य मिला है, वह भी अपने-आप करें, किसी के नोट कॉपी न करें, स्वयं पुरुषार्थ करके उत्तर निकालें – यह भी स्वावलम्बन है। ऐसे नहीं कि हमारे लेखन या पाठयक्रम का कार्य हमें कोई करके दे।

जगदीश और सीमा, दोनों इस गुण के कारण ही अपने स्कूल में प्रथम नम्बर लिया करते थे। स्वावलम्बी होने के कारण उनमें हिम्मत और साहसिकता थी। जितना है उसमें से ही कैसे आगे बढ़ें उसके लिए उपाय ढूंढने की वृत्ति रहती थी और नम्रता और सहयोगीपन के कारण सबसे मिल-जुल कर रहते थे। स्वावलम्बी होने के कारण कुछ-न-कुछ नया सहज तरीका ढूँढ निकालते थे। स्कूल में भी सायन्स क्लब में नयापन लाते थे। तो नये-नये मॉडल भी बनाते थे और स्कूल में मददगार भी बन जाते थे।

घर में उनकी माता सुन्दरी बहन भी स्वयं स्वावलम्बी रहती थी। एक धनवान कुटुम्ब की होने के बावजूद भी घर में रसोई बनाना, बर्तन साफ़ करना, कपड़े धोना, घर की सफ़ाई करना – ये सब वह स्वयं करती थी और अपने आचरण से बच्चों को भी अपने बहुत से काम स्वयं करना सिखाता थी। जगदीश और सीमा घर में भी मददगार बनते थे।

अगर कोई बात समझ में न आवे तो बुद्धि कसकर नयी-नयी

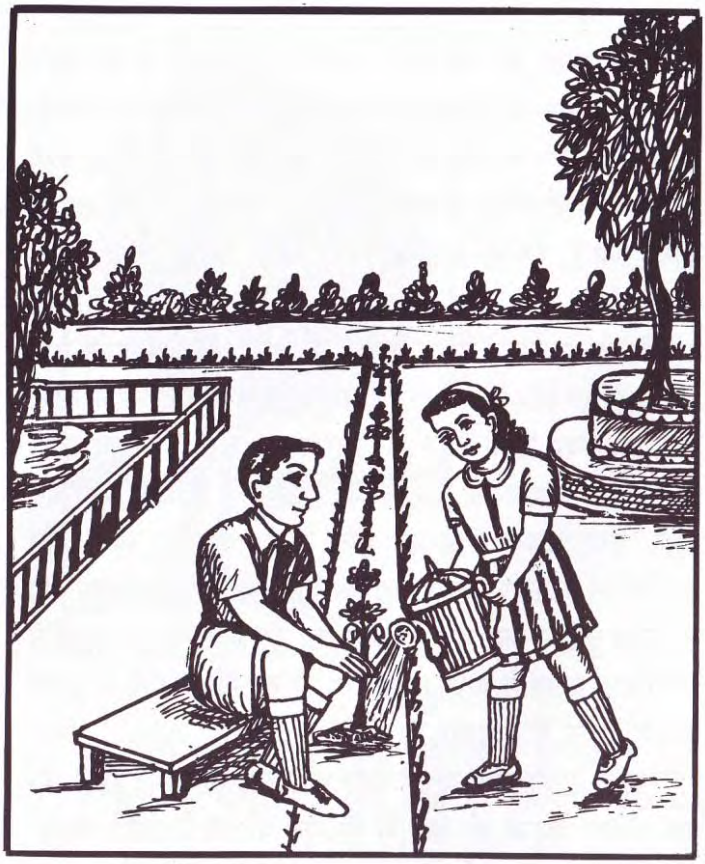

अच्छी किताब पढ़कर, सुबह को जल्दी जागकर, बुद्धि द्वारा मनन करते थे, सोचते थे, फिर भी उत्तर न मिले तब ही मात-पिता या मित्रों से या शिक्षक से अपना हल लेते थे।

स्वावलम्बी व्यक्ति स्वतंत्र होता है। सच्चा स्वावलम्बी अपने

अच्छे गुणों पर जीता है। कोई शान्त रहे तभी उससे शान्त रहे – ऐसा नहीं, पर वह स्वयं सदा ही शान्त रहता है। कोई मदद करे तो उसे मदद दे, ऐसा नहीं, पर वह सभी का मददगार बनता है। कोई प्यार करे तो उन्हें प्यार करे, ऐसा नहीं पर वह सब से प्यार करता है अर्थात् स्वावलम्बी के गुण औरों पर आधारित नहीं होंगे। वह स्वयं ही गुणवान होता है। ऐसे स्वावलम्बी हैं देवी-देवतायें, ऐसा स्वावलम्बी बनाने वाला है परमपिता। जो स्वतंत्र हैं। मुक्त हैं। वो आत्मा को गुणवान, शक्तिस्वरूप बनाते हैं। जिसके लिये कहेंगे कि मनुष्यात्मा अपने पांव पर खड़ी है।

प्रश्न

1. सच्चे स्वावलम्बी कौन है? स्वावलम्बी कौन बनाते हैं?
2. जगदीश और सीमा ने कौन सा सूत्र जीवन में अपनाया था।
3. जगदीश और सीमा को कुछ नहीं आता था तो क्या करते थे?
4. स्वावलम्बी व्यक्ति कैसा होता है?

निर्भयता

शेर अकेला होते हुए भी अपने को बादशाह समझता है और अपनी रीति से घूमता है, वह है उसकी 'निर्भयता'।

निर्भय व्यक्ति ही जीवन में आगे कदम रख सकता है, आने वाले तूफ़ान को पार कर सकता है। वह तूफ़ान को तूफ़ान न समझ कर तोहफ़ा समझता है और उससे कोई नया मार्ग ढूँढ निकालता है। पवित्रता, सत्य और स्नेह के मार्ग पर चलने वालों को भय कैसा?

निर्भयता विविध बातों में धारण करनी पड़ती है। सच्चाई पर चलने की हिम्मत रखने से कोई कुछ बोले, टीका या निन्दा करे तो उससे न डर कर, निर्भय रहें। अगर अपने में बुरी आदत है तो उसे दूर कर अच्छे संस्कार डालने में भी निर्भयता चाहिए। अच्छे बच्चे बनने में कोई अपने कुसंस्कार के

वश होकर विघ्न डाले तो भी निर्भयता से आगे बढ़े। नये स्थान पर, नये लोगों के बीच जाते हैं तो सबसे मिल-जुल जाने में निर्भय रहें, अपने से बड़े हों और उन्हें हम अपनी कुछ बात कहना चाहते हैं तो नम्रता के साथ निर्भय होकर कहें। हर बात में निर्भयता चाहिये।

निर्भय व्यक्ति ही साहस रखकर, नया कुछ कर सकता है। निर्भय ही हिम्मत रख, धैर्यता से आगे कदम उठा सकता है तथा औरों को उमंग-उत्साह दिलाकर आगे बढ़ सकता है। निर्भय ही निर्वैर होता है।

निर्भय बनने के लिये याद रहे कि ''मैं चेतन ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ। अमर हूँ। मैं सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का बच्चा हूँ। मैं शक्ति स्वरूप हूँ।''

प्रश्न

1. निर्भय कैसे बनें?

2. निर्भय व्यक्ति कैसा होता है?

3. निर्भय व्यक्ति क्या कर सकता है?

4. निर्भय किन-किन बातों में बनना है?

गुण ग्राहकता

गुण ग्राहकता का अर्थ है दूसरों के गुणों को देखना और वे गुण अपने आचरण में धारण करना। श्रीकृष्ण है सर्वगुण सम्पन्न। गुण ग्राहकता का गुण, सर्व गुण सम्पन्न बनने में मददगार बनता है।

परमपिता परमात्मा है गुणों के सागर, ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, पवित्रता के सागर, आनन्द के सागर, शान्ति के सागर सर्वशक्तिवान। ज्ञान और गुणों के सागर परमपिता परमात्मा की याद में रहने से आत्मा स्वत: ही गुणवान बन जाती है।

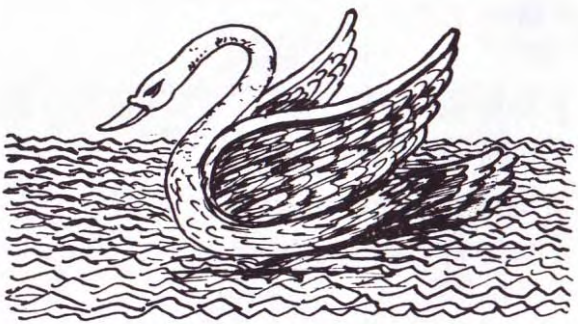

गुणग्राहक आत्मा की नज़र सदा गुणों की ओर जाती है। वह बुराई को ग्रहण नहीं करती। वह 'हँस' के समान होती है। हँस का रूप है सफ़ेद, उसका कर्त्तव्य है मोती चुगना, नीर-क्षीर का भेद जानते हुए क्षीर ग्रहण करना। मोती और कंकर इकट्ठे पड़े होंगे पर हँस मोती ही चुगता है, क्षीर-नीर से क्षीर ही ग्रहण करता है। हम भी हँस की तरह, सदा पवित्र रहकर सदा गुण ही ग्रहण करें।

गुणग्राहक व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है और वह न्यारा और प्यारा रहता है।

यदि कोई हमारी निन्दा करता है तो भी हम उसके गुण ही देखें और वर्णन करें तो वे भी गुणों को देखना सीखेंगे और आपके गुण गायेंगे। किसी में सच्चाई का तो किसी में सहयोगी बनने का, किसी में नम्रता का, किसी में मधुरता, किसी में हर्ष तो किसी में सरलता, तो किसी में रमणीकता का गुण होता है। कोई कितना भी अवगुणी हो पर हम 100 अवगुणों के बीच में रहते हुये भी उसके गुण की ओर ही देखें, न सिर्फ़ औरों के बल्कि स्वयं के भी गुण ही की तरफ़ हमारी दृष्टि रहे।

प्रश्न

1. गुणग्राहक बनने का अर्थ क्या है? गुणग्राहक कैसे बनेंगे?

2. गुणग्राहक व्यक्ति क्या करता है?

3. गुण ग्राहकता का गुण क्या बनने में मदद करता है?

प्रेम

सबसे मीठी चीज़ है – प्रेम। हम सब हैं प्रेम के सागर परमात्मा की सन्तान। हमें आपस में बहुत प्यार से रहना है। हम हैं आत्माएँ, आत्मा है भाई-भाई। हम भाइयों को अपने परमपिता जैसा प्यार का सागर बन जाना है। प्यार बड़ी मीठी चीज़ है, जो देने से बढ़ जाती है। पैसे देने से, पैसे कम हो जाते हैं पर प्यार देने से प्यार बढ़ जाता है। प्यार देने से प्यार मिलता है।

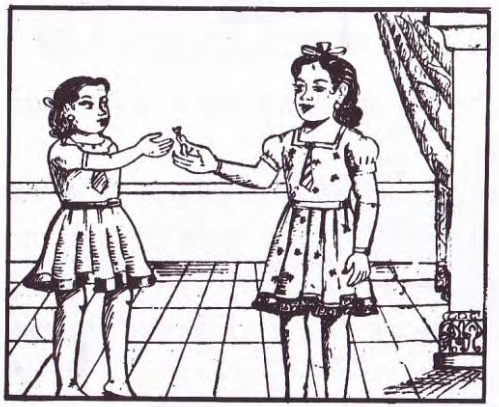

लो मुन्नी मेरे पास चाकलेट है। आप खाओ

प्रेम ही है सर्व के भाग्य का ताला खोलने की चाबी। प्यार है तो भूल को क्षमा कर देंगे। प्यार है तो जिससे प्यार है उसे जो चाहिये, वह देंगे। प्यार है तो जिससे प्यार होता है उसकी पसंद को, अपनी पसंद बनायेंगे। प्यार है तो अपने हिस्से से भी दे देंगे। प्यार है तो तुरन्त मददगार बन जायेंगे। स्नेही व्यक्ति सहज सर्व से मिलजुल जायेगा। प्यार का जादू बहुत बड़ा है। स्नेह के लिये ही कहते हैं – ''स्नेह पत्थर को भी पानी कर देता है।'' कोई अच्छी बात, सच्ची

बात, बहुत प्यार से कहेंगे तो मान जायेंगे।

चलो हम साथ में गेहूँ साफ़ कर लें फिर स्कूल जावेंगे।

प्यार है बड़ी मीठी चीज़, पर ऐसा प्यारा बनें कैसे? बहुत सहज उपाय है। अगर अपने को आत्मा समझ प्यार के सागर परमपिता को बहुत प्यार से याद करें तो प्यारे बन जायेंगे। अच्छे बच्चे बनने से सबके प्यारे बन जायेंगे।

यह किसको उठाकर जा रही हो, बोझ नहीं लगता?
बोझ कैसे लगेगा? यह तो मेरा भाई है।

प्यार के जादू पर थोड़ा सोचें – अगर विश्व में सब प्यार से रहें तो न लड़ाई-झगड़ा हो, न रूठना और न द्वेष् हो, न चोरी होगी, न दंगा होगा और न कपट होगा। फिर तो न कोर्ट होंगे, न पुलिस होगी, न किसी का डर होगा। सारे जग में स्नेह ही स्नेह होगा। तब धरती 'स्वर्ग' ही बन जायेगी।

प्रश्न

1. हम किसके बच्चे हैं? आपस में कौन हैं? हमें कैसे रहना है?

2. प्यार क्या करता है?

3. प्यार है तो, क्या नहीं है?

4. स्नेही-प्यारे कैसे बनें?

हम अच्छे, सच्चे बच्चे

हम बच्चे हैं अच्छे बच्चे,
सच्चे बच्चे, मीठे बच्चे,
परमपिता के प्यारे बच्चे,
हम बनेंगे दैवी बच्चे,
दैवी फूल, दैवी फूल, दैवी फूल।

सुख देते हैं, सुख पाते हैं।
प्यार से रहते, प्यारे रहते।
खुशी बाँटते, खुशी में रहते।
स्वच्छ रहकर, स्वच्छ बनाते।

एक पिता के बच्चे हम।
आपस में भाई-भाई हम।
प्यार से याद कर परमपिता को।
सबके प्यारे बनते हम!

शुभ सोचते, शुभ ही बोलते।
शुभ करते हम, शुभ पाते।
शुभ देखना, शुभ सुनना।
शुभ्रता से सतयुग आना।

दिव्य बुद्धि और श्रेष्ठ कर्म से,
जग को स्वर्ग बनायें हम,
हम ही बनेंगे श्रीराधे।
हम ही बनेंगे श्री कृष्ण।
हम ही हैं वो दैवी फूल।
दैवीफूल, दैवीफूल, दैवीफूल

मर्यादा पालन

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण हैं – मर्यादा पुरुषोत्तम। मर्यादा अर्थात् जो सत्य है और जो शुभ है, उसके अनुसार चलना।

अच्छी, सच्ची बात जीवन में धारण करने से, अर्थात् सच्ची मर्यादा पर चलने से जीवन में सुख मिलता है।

कब क्या सोचें, कब क्या बोलें, कैसे बोलें, उठें, बैठें, भोजन लें, कैसा ड्रेस हो, कैसे कब पढ़ें, कैसे कार्य करें – ये सब समझ कर वैसे चलना चाहिये।

श्री नारायण *श्री लक्ष्मी*

1. *सोचने में अपने को ज्योतिबिन्दु आत्मा, ज्योतिबिन्दु शिव पिता की सन्तान समझें। सदा स्वयं और सर्व का कल्याण सोचें।*

2. *देखना है तो आत्मा को अपने भाई के रूप में देखें। विशेषता और गुणों को देखें।*

3. बोलना है तो सत्य बोलें, मधुर बोलें, शुभ बोलें, धीरे से बोलें। यह याद रखें कि मैं आत्मा अपने भाई से बात कर रहा हूँ।

4. उठते-बैठते, चलते-फिरते अपने परमपिता परमात्मा की याद में रहें।

5. अमृतवेले उठें, परमपिता को नमस्ते करें। रात को सोते समय शुभ चिन्तन में, परमपिता परमात्मा को याद करते-करते सो जावें।

6. भोजन सात्विक हो, परमपिता की याद में रहकर भोजन लें।

7. हमारे वस्त्र मर्यादायुक्त हों। किसी को लज्जाजनक, लगें — ऐसे न हों।

8. व्यवहार में सदा नम्रता से बात करें। सब को सम्मान देकर बात करें, सभी को सन्तुष्ट करें। सर्व से सन्तुष्ट रहें। अपने मात-पिता से, शिक्षक से, मित्रों से, 'सब से स्नेह से रहें।

9. हर कर्म समय पर हो, अच्छा हो, परमपिता की याद में रहकर करें, सच्ची मर्यादा में चलना ही शिस्त का पालन करना है।

प्रश्न

1. मर्यादा का क्या अर्थ है?

2. सोचने में क्या मर्यादा है?

3. देखें कैसे?

4. बोलें क्या और कैसे?

5. उठेंगे कब? उठना और सोना कैसे हो?

6. हमारा ड्रेस कैसा हो?

7. भोजन कैसे लें?

8. व्यवहार में कैसे रहैं?

9. कर्म कैसे करें?

सहनशीलता

खट-खट, खट-खट। कमरे से आवाज़ आ रही थी। देखा तो शिल्पिक संगमरमर की विष्णु की प्रतिमा बना रहा था।

कितने हथोड़े उनपर लग रहे थे। पर वह सम्पन्न होने वाली मूर्ति थी – अच्छी बनने की थी।

पत्थर की मूर्ति को पूज्य रूप में रखने के लिये कितने प्रहार उस पर पड़ते हैं। अगर हम चेतन रूप में पूज्य देवी-देवता बनना चाहें, अच्छे बच्चे, श्रेष्ठ बच्चे बनना चाहें तो हम पर भी अनेक समस्या और परीक्षा रूपी हथोड़े पड़ेंगे ही और ये हथोड़े ही तो अच्छे बनने में मददगार बनेंगे। सहन करने से ही तो आगे बढ़ेंगे, सम्पन्न बनेंगे। विघ्न तो पुरुषार्थ में लगन बढ़ाने का साधन हैं। सहनशील व्यक्ति की सदा ही महिमा होती है।

शारीरिक बीमारी के रूप में परीक्षा आवे, मन पर चिन्ता हो, धन की कमी हो, कोई अच्छा-बुरा बोले, कोई भी छोटी-मोटी समस्या या विघ्न हो, उसे हिम्मत रख सहन करना चाहिये। थकना नहीं है, न हिम्मत हारनी है, न घबराकर अपना ऊँचा लक्ष्य छोड़ देना चाहिये। पर लक्ष्य को और मज़बूत करना चाहिये। थोड़ा सहन करने से बहुत बड़ा झगड़ा मिट जाता है। दोस्ती टूटती-टूटती रह जाती है। हमने जो कुछ किया है वो ही परीक्षा के रूप में हमारे सामने आया है, तो स्वयं को परमात्मा का अच्छा होशियार विद्यार्थी समझ, समस्या को परीक्षा का पेपर समझ, अच्छी रीति से उसे पास करना है। जो सहनशीलता में सबसे ज्यादा मार्कस् ले, सबसे अच्छा बच्चा बनने में नं.1 ले।

परमपिता परमात्मा की स्नेह भरी याद का साथ आत्मा की सहनशक्ति बढ़ा देती है और आत्मा विजयी बनती है।

प्रश्न

1. सहन करने से क्या होगा?

2. सहन करने के लिये स्वयं को क्या समझें? समस्या को क्या समझें?

3. सहनशक्ति कैसे बढ़ेगी?

सेवा

सेवा अर्थात् मेवा

सुख देने से, खुशी देने से, शान्ति देने से शान्ति मिलती है, घटती नहीं, परन्तु बढ़ती है।

दान देने से दुआ मिलती है, जो दुआ आत्मा को अच्छा बनने में मददगार बनती है। अच्छे बच्चे सेवा ज़रूर करते हैं।

सेवा विविध रीति से कर सकते हैं। मन से सेवा, वचन से सेवा, कर्मों से या धन से सेवा। हो सके तो सर्व तरीकों से सेवा करनी चाहिये, नहीं तो किसी-न-किसी एक रीति से तो सेवा ज़रूर करनी चाहिये।

सेवा मन से

सेवा वाचा से

सेवा एक साधन है, दिलों को जीतने का। सेवा से औरों को

सन्तुष्ट कर सकते हैं। सेवा करने से अन्य सुखी होते हैं तो स्वयं भी सुखी होते हैं।

सेवा कर्म से

श्री लक्ष्मी-श्री नारायण, जो सारे विश्व के महारानी, महाराजा थे, वे इतने ऊँचे कैसे बने! अहिंसक देवताओं ने हिंसा से तो राज्य नहीं लिया होगा। वे सर्व आत्माओं की इतनी सेवा कर, प्यार से दिलों को जीतकर ही ऐसे ऊँचे बने।

सेवा करने के लिये कुछ गुण भी आवश्यक है। सेवा करने के लिए 'नम्रता' चाहिये। सेवा स्नेह से करनी है। सेवा करने में थोड़ा-बहुत सहन भी करना पड़े तो करना चाहिये। सेवा करते समय जिसकी सेवा करते हैं, उसके गुण भी बुद्धि में रहने चाहियें। सेवा करने वाले व्यक्ति को धैर्यवान और गम्भीर होना चाहिये। सेवा करते समय शुभ-भावना रहे तभी सेवा अच्छी तरह से कर सकेंगे।

प्रश्न

1. सेवा करने से क्या मिलता है?
2. सेवा किस रीति से कर सकते है?
3. सेवा करने के लिये कौन-से गुण ज़रूरी हैं?

हम भारत को स्वर्ग बनायेंगे

भारत को स्वर्ग बनायेंगे,
हम कसम आज ये खायेंगे।
छोड़ेंगे पाँच विकारों को,
रह पवित्र, पवित्र बनायेंगे।
दैवी गुण धारण करके,
दैवी स्वराज्य हम लायेंगे। भारत को स्वर्ग.....
एक परमपिता के बच्चे हम,
भाई-भाई बनके रहेंगे।
सत का संग सदा रख के,
हम सतयुग धरती पर लायेंगे। भारत को स्वर्ग.....
हिम्मत-साहस नहीं छोड़ेंगे,
धैर्य से कदम उठायेंगे।
सच्चाई-सफ़ाई से हम,
भारत में सतयुग लायेंगे। भारत को स्वर्ग.....
अमृतवेले उठकर हम,
ज्ञान-रोशनी फैलायेंगे।
उलझा सूत सुलझा करके।
प्यार से अपना बनायेंगे। भारत को स्वर्ग.....